Digitized by eGangotri

593
A157

रामकुमार भ्रमर

Ram Kumar Bramer

तीसरा पत्थर

Teesra Pather

स्कैन्ड/Scanned
31930

Roypal and son's, Delhi
राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

Acc. No 31930
Cost Rs. 5.00
Date 25.11.69

Pratap Singh
Library
Srinagar

H83
R17T

C

मूल्य : पांच रुपये
पहला संस्करण : १६६६ 1969

© रामकुमार भ्रमर

TISARA PATTHAR by Ram Kumar Bhramar
Novel Rs. 5

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चम्बल के नाम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उपन्यास से पहले

चम्बल अंचल विशिष्ट सामाजिकता और संस्कारों में जीता है। वहां के बीहड़ खतरनाक डाकुओं के लिए अब से नहीं, सैकड़ों साल से मशहूर हैं। कई बार रुढ़िग्रस्त समाज और वातावरण में 'अपराध' भी संस्कार का चेहरा ओढ़ लेते हैं और ऐसे चेहरों को 'हृदय-परिवर्तन' के भाषणों या उपदेशों से तोड़ पाना असम्भव है।

ये चेहरे टूट सकते हैं, मनुष्य की अपनी निर्णायक बुद्धि से—जो अनुभवों के आधार पर सही और गलत की पहचान करती है। और वहीं होता है 'हृदय-परिवर्तन'।

'तीसरा पत्थर' उन अपराधियों की कहानी है, जो विशेष सामाजिक स्थितियों और वातावरण के कारण 'अपराध' को संस्कार समझकर ओढ़े रहे और जब अनुभूतियों की ठोस धरती पर खड़े हुए तब उनसे उनके अपने आप ने ढेरों सवाल कर दिए।

—रामकुमार भ्रमर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पहला पत्थर

चम्पा से मिलने न जाकर अगर वह सीधा लालाराम की हवेली पर ही चला जाए तो ?…

लालाराम बरामदे में ही सो रहा होगा। फौजदारसिंह जानता है कि वह बारिश के मौसम में बरामदे में ही सोता है। बरामदे में किवाड़ नहीं हैं। इतने घने अंधेरे में फौजदारसिंह को कोई देख भी नहीं सकेगा। उसने खाकी कपड़े पहन रखे हैं।

क्या लालाराम के घर जाया जा सकता है ?

क्यों नहीं जाया जा सकता ! सावधानी बरतनी पड़ेगी। बरामदे तक दबे पांव बढ़ते जाना होगा और फिर लालाराम के कपाल का निशाना लेना पड़ेगा…फौजदारसिंह कुछ अटकता हुआ सोच रहा था। बीच-बीच में उसे अपना सारा ध्यान इस खयाल को सौंप देना होता था कि वह 'बागी' है और बागी के साथ हर क्षण मौत होती है—उसे छू लेने की कोशिश करती हुई !

रात का पहला पहर बीत चुका था। झाईं के स्वर कर्कश होकर एक लय में गूंजने लगे थे। चारों ओर गहरा अंधेरा था और आगे बढ़नेवाले हर कदम के साथ फौजदारसिंह को लग रहा था कि सारा गांव, बीहड़, खेत-खलिहान यहां तक कि स्वयं फौजदारसिंह काली स्याही से भरे एक बड़े—दृष्टि के पार तक फैले हुए—कुंड में डूब गए हैं।

क्या सचमुच लालाराम के बरामदे तक पहुंचा जा सकता है ? और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यदि पहुंच भी गया तो क्या लालाराम को मारा जा सकेगा ? दूसरे ही क्षण फौजदारसिंह को लगा कि यह बेवकूफी है ! लालाराम का घर थाने के बहुत करीब है। न भी होता तो क्या इतनी आसानी से, जिस तरह फौजदारसिंह सोच रहा है, लालाराम को गोली मारी जा सकती थी ?··· शायद बहुत कठिन था यह ! कठिन क्या, लगभग असंभव !

फौजदारसिंह के फरार होते ही लालाराम ने सुरक्षा का पूरा इन्तज़ाम करवा लिया था। बदले की आग में झुलसते हुए फौजदारसिंह को बीहड़ों में हर खबर मिलती रही थी···यह कि अब लालाराम ने पुलिस सुप-रिण्टेडेण्ट से आदमी मांगे हैं···कलेक्टर को दरख्वास्त दी है···उसके पांव पकड़ लिए हैं···वह एम० एल० ए० और मिनिस्टरों तक दौड़ रहा है··· और अब लालाराम की हवेली पर पुलिस के दो गार्ड लगा दिए गए हैं। दो गार्ड यानी दस सिपाही, हवलदार और दरोगा।···

डरपोक कहीं का !···फौजदारसिंह घृणापूर्वक उसके नाम मन ही मन गालियां उछालता रहा था। और भी बहुत-सी खबरें थीं, जो उसे बराबर मिलती रही थीं।

लालाराम ने इधर-उधर नाते-रिश्तेदारी में जाना तो दूर रहा अपने गांव में भी घर छोड़कर निकलना बन्द कर दिया था। सुनते हैं कि वह दिनभर पुलिसवालों से घिरा रहता है और रह-रहकर फौजदारसिंह को कोसता रहता है···

हो सकता है, लालाराम ने बरामदे में सोना भी बन्द कर दिया हो···अगर सोता भी हो तो पास में ही पुलिस···

नही ! फौजदारसिंह वहां जाने की बेवकूफी नहीं करेगा। बहादुरा ने फौजदार को ठीक ही समझाया था— "फौजदार ठाकुर, बागी को उता-वली नहीं करनी चाहिए। बीहड़ों में जीना तलवार की धार पर खड़े रहना है। ज़रा हिले और लहू बहा···"

लालाराम के घर इस तरह चले जाना उतावली ही होगी। तलवार की धार पर हिल जाना। पलक मारते लहू बह जाएगा। हो सकता है कि इस खेल में फौजदारसिंह को जान से ही हाथ धोना पड़े ! यदि ऐसा हुआ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तो लालाराम को गोली से उड़ा देने की इच्छा मन में ही रखी रह जाएगी और फौजदारसिंह अतृप्ति की मौत पसन्द नहीं करता !

उसने कंधे पर लटकी रायफल सम्भाली। काफी देर से चलते रहने के कारण पट्टा नीचे खिसक आया था। उसे हर वक्त रायफल का खयाल रहता है। घर-बार, दोस्त, नातेदार सबमें यदि कुछ सच रह गया है तो यही रायफल !

इसका मतलब यह कि लालाराम ज़िन्दा रहेगा। फौजदारसिंह को अपने गांव में आकर भी उसे ज़िन्दा ही छोड़ जाना होगा। इस तरह कब तक ज़िन्दा रहेगा वह ? शायद हमेशा। कम से कम फौजदार के मरने तक तो लालाराम ज़िन्दा ही रहेगा क्योंकि वह पुलिस का आंचल ओढ़े हुए है और फौजदारसिंह का बदला मौत के भय से माटी के ढेले की तरह गल गया है !

थू !···फौजदारसिंह को अपने आपसे घृणा हुई। इस तरह मंज़िल पर आकर लौट जाएगा ? लानत है उसके क्षत्रिय धर्म पर !···ऐसा करके बिहारीसिंह की आत्मा को ठेस ही पहुंचाएगा फौजदारसिंह। कायर !··· उसने अपने आपसे कहा और फिर खुद के नाम गालियां दीं—नामर्द !··· आदमी है या औरत !···ठाकुर का बेटा है या किसी नाचनेवाली का !···

नहीं ! अपनी ज़िन्दगी के डर से फौजदारसिंह दुश्मन को नहीं छोड़ सकता। बिहारीसिंह की आत्मा की बात नहीं टाल सकता। कितनी उम्मीद से कहा था बिहारीसिंह ने—"फौजदार ! तू मेरा मां-जाया है, मेरा लहू ! बदला ज़रूर लेना ! इस कमीने लालाराम को ···'

और फौजदारसिंह— बिहारीसिंह का मां-जाया भाई·· उसका लहू — खामोश देखता रहा था। वही क्या, सब देखते ही रह गए थे, क्या सचमुच वह सही है जो आंखों के आगे घट रहा है ? इतने रोब-दाब वाले बिहारीसिंह के साथ ऐसा भी हो सकता है, गांव का कोई आदमी कल्पना तक नहीं कर सकता था। एकदम अविश्वसनीय घटना घट गई थी उस दिन !

बिलकुल अविश्वसनीय !

फौजदार सो रहा था खेत पर। वहीं उसे खबर मिली थी कि उसके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

घर पर पुलिस ने छापा मारा है !

"क्यों ?" वह हड़बड़ाकर जगा था।

"चोरी के मवेशी बरामद करने के लिए !" बतानेवाले ने बताया था।

"खबर किसने दी ?"

"शायद लालाराम ने !"

फौजदार ने आगे कुछ नहीं पूछा था। बगल में रखी थी रायफल—थ्री-नाट-थ्री। खेतों पर रखवाली के लिए वह हथियार साथ रखता था। उसने कहा था, "तुम लोग चलो, मैं आता हूं।"

खबर पहुंचाने वाले उसकी 'पार्टी' के लोग थे। लालाराम के विरोधी। वे चले गए थे और फौजदार ने उनके जाते ही रायफल खलिहान में लगे अनाज के ढेर में दबा दी थी। जहां पुलिस हो, वहां बिना लायसेंस का हथियार कैसे ले जाया जा सकता है ! फिर वह लगभग दौड़ता हुआ अपनी हवेली की ओर चल पड़ा था। पहुंचा तो देखकर हैरान रह गया !

बिहारीसिंह को पुलिस ने पकड़ लिया था। उसके हाथों में मुश्कें पड़ी थीं। फौजदार सन्नाटे में आ गया। दिमाग कुछ पलों के लिए बन्द हो गया। सारा गांव घरों से उबलकर बाहर निकल आया था—गलिहारों में। चेहरे उदास और आंखों में भय। बात, बात से बहुत आगे बढ़ गई थी। इस तरह बिहारीसिंह को पकड़ लेना इस गांव के लिए साधारण घटना नहीं थी। बिहारीसिंह था मुखिया—आसपास के कई गांवों का मुखिया। असल ठाकुरों का लहू दौड़ता था उसकी नसों में। उसकी चढ़ी भंव से आसपास के गांवों में आंधी बहती थी, दस हाकिम-हुक्काम उसे जुहार करते थे और लोग जानते थे कि बिहारीसिंह क्षत्रिय धर्म के अनुसार रोटी बन्दूक से पैदा करता है और उसी के ज़ोर पर खाता है।

पर आज···? आज, बिहारीसिंह ले जाया जा रहा था। इस तरह जैसे बहुत साधारण अपराधी हो। स्टेशन पर रुपये-बारह आने की चोरी-चपाटियां करनेवाला। इतनी इज्ज़त-आबरू, मर्यादा-मरतबे वाले आदमी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

की ऐसी बेइज़्ज़ती !···

फौजदार दिलो-दिमाग के नाम पर बिलकुल बन्द ! इस तरह आश्चर्यचकित खड़ा रह गया था जैसे सामने आल्हा की पोथी में लिखा कोई जादू घट गया हो। आदमी से मेमना बन गया है। बिलकुल अनहोना !··

अनहोना ही था। बिहारीसिंह की मूंछ सारी बिरादरी में सबसे ऊंची थी। उसकी हवेली गांव की एकलौती पक्की हवेली थी। उसके यहां सबसे अच्छी बरातें आती-जाती रही थीं। उसके यहां अंगरेज़ी दारू पी जाती थी··

और उसी हवेली में पुलिस !

बिहारीसिंह मुश्कों में कसा सुलग रहा था। उसने असहाय भाव से एक ओर खड़े फौजदारसिंह को देखा था। कितनी निरीह, शर्म से टूटी हुई चोर नज़र थी उसकी ! जब पुलिस ने छापा मारा तो बिहारीसिंह को रायफल उठाने का भी मौका नहीं मिला था। एकाएक ही चार-पांच सिपाहियों ने उसे धर दबोचा था। निरुपाय पुलिस के सिपाहियों के धक्के झेलता हुआ बिहारीसिंह कुछ क्षणों तक बदहवास इधर-उधर देखता रहा था फिर फौजदार से बोला था—"फौजदार ! तू मेरा मां-जाया है, मेरा लहू ! बदला ज़रूर लेना। इस कमीने लालाराम को···"

फौजदार ने ही नहीं, सबने सुना था। चेहरों पर भयभरी कालिख फैल गई थी। लोग जानते हैं कि फौजदार भी कम नहीं है. उसकी भंव में भी वही आब है। बात में वही बात। बिलकुल बिहारीसिंह की प्रतिच्छाया। उसका लहू ठहरा—छोटा भाई ! कुछ होकर रहेगा।

ग्रामीणों में से कोई एक फुसफुसाया था—लालाराम ने थाने में रिपोर्ट की ! दोनों पार्टियों में बहुत चढ़ गई थी न !···

ओह ! दस-पांच दर्शकों की गरदनें कांपती हुईं इधर-उधर मुड़ी थीं—लालाराम नहीं है, होता तो···

कितना बदमाश और शातिर है लालाराम। थाने में रिपोर्ट कर बिहारी की हवेली पर दरोगा और सिपाही भिजवाकर खुद गायब हो गया है !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अच्छा नहीं किया लालाराम ने।…शायद अच्छा ही किया। गुंडागर्दी की भी एक हद होती है। बिहारीसिंह और उसकी पार्टी ने अति कर रखी थी। आसपास के गांवों की नींद हराम थी। किस दिन क्या हो जाएगा, कोई कुछ नहीं कह सकता था। सरासर रायफलें ले-लेकर घरों से निकल आते थे कमीने!

और लालाराम ही क्या कम था? वह भी तो वही व्यवसाय करता था जो बिहारीसिंह, फौजदारसिंह और उनकी पार्टी के लोग करते थे। जब तक दोनों पार्टियों में निभती रही तब तक कोई घटना नहीं घटी फिर जब बिगाड़ हुआ तो इस तरह…

गांव में दो पार्टियां थीं। हर पार्टी में गांव के पचास से ऊपर लठैत या रायफलवाले लोग। एक का मुखिया—बिहारीसिंह, दूसरी का लालाराम! दोनों का एक धन्धा। दोनों थान[1] चलाते थे और पनिहाई[2] वसूल करते थे। बरसों से चल रहा था। हर दल के लोग रायफलों और लाठियों से लैस बीहड़ों में जाते और किसी पशु को चुरा लेते। खोजता हुआ मालिक संबंधित दल तक आता। दल का मुखिया पशु को छोड़ने के लिए कुछ राशि निश्चित कर देता। यदि वह राशि पशु के मालिक द्वारा अदा कर दी जाती तो उसे पशु दे दिया जाता अन्यथा वह थान में बन्द रहता। साधारणतः लोग रुपये अदा कर देते थे। दोनों दलों में से किसी के विरुद्ध पुलिस तक जाना आसान नहीं था। ऐसा करने पर वह दल मालिक को समाप्त कर सकता था। गांवों में हत्या की गवाही देनेवाले भी न मिलते। इस तरह बिहारीसिंह और लालाराम दोनों ही दलों का अवैध व्यापार चल रहा था, तभी उनमें ठन गई।

हुआ यह कि लालाराम के दल के किसी सदस्य के रिश्तेदार के कुछ पशु चोरी हो गए। पता लगा कि वे बिहारीसिंह के आदमियों ने चुराए हैं। लालाराम ने बिहारीसिंह को खबर भेजी कि वे पशु तुरन्त छोड़ दिए जाएं, किन्तु बिहारी ने कहा कि पनिहाई दिए बगैर उन्हें नहीं छोड़ा जाएगा। इसी बात को लेकर दोनों दलों में ठन गई। लालाराम ने पुलिस

१. थान—वह जगह जहां चोरी किए गए मवेशी रखे जाते हैं।
२. पनिहाई—चोरी हुए पशु को छोड़ने के लिए एक मोटी रकम वसूल करना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

में रिपोर्ट दर्ज करवा दी थी और परिणाम था यह पुलिस-छापा।···

बिहारीसिंह को पकड़ लिया गया था। कुछ पुलिसवालों ने फौजदार को धक्का देकर हवेली में प्रवेश पा लिया और घर का सारा सामान उलट-पुलट डाला। जब वे बाहर आए तो खुश थे। फौजदारसिंह ने भी भीतर जाने की कोशिश की थी, पर दरोगा ने रोक दिया, "नहीं, तुम नहीं जा सकते। खानातलाशी होगी। चोरी के मवेशी थान से बरामद किए जाएंगे!"

और फौजदारसिंह कुछ नहीं कर सका था। उसका दल भी कुछ नहीं कर पाया था। पुलिस की संख्या काफी थीं और उनमें से हर आदमी के पास महंगी रायफलें थीं। समझदारी इसी में थी कि चुपचाप सब कुछ सह लिया जाए। वह सिर्फ दांत पीसकर रह गया था—लालाराम! कमीने! कोई चीज़ थी, जो उसकी आंतों में उलझी रह गई थी—शायद लालाराम के प्रति बदले का खयाल!

बिहारीसिंह ले जाया जा रहा है। चोरी के बीसों चौपाये पुलिस ने ज़ब्त कर लिए हैं। बिना लायसेंसवाली तीन रायफलें भी बरामद हुई हैं।

दरोगा ने कहा था— "इसमें शक नहीं कि रिपोर्ट बिलकुल सही मिली थी···'

हवेली के आंगन में बंधे थे ढोर। ढोरों के मालिक पुलिस अपने साथ लाई थी। पलक मारते बिहारीसिंह का सारा खेल चौपट हो गया था।

दरोगा बिहारीसिंह और फौजदार की ओर देखकर मुस्कराया था। कितनी क्रूर मुस्कराहट थी वह! जैसे फौजदारसिंह के मुंह पर एक तमाचा जड़ दिया हो। फौजदार के ही क्या, उसके सारे खानदान के चेहरे पर। तबीयत हुई थी, झपटे और उस दरोगा के बच्चे को···गोली से उड़ा दे!

मगर कितना अवश था फौजदार! वे सब रायफलोंवाले थे और फौजदार निहत्था। रायफल खलिहान में अनाज के ढेर में दबी पड़ी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

"चलो !" एक सिपाही ने बिहारीसिंह को धक्का दिया था। कितनी ज़ोर का धक्का ! बिहारीसिंह गिरते-गिरते बचा था। उसकी आंखें जल उठी थीं। जलन फौजदार को भी हुई थी, मगर वे सब रायफलें··· निहत्था फौजदारसिंह ! रायफल के बगैर 'मर्द' आदमी कितना दब्बू हो जाता है ? भूसे की बेशर्म बोरी जैसा। चाहे जहां फेंक दीजिए—पड़ी रहेगी।

···और भूसे की बोरी-सा ही पड़ा रह गया था फौजदार ! पुलिस उसकी आंखों के सामने बिहारीसिंह को ले गई थी और सारी ठकुरास का कलफ पलक मारते उतर गया था।

जाते समय बिहारीसिंह लौट-लौटकर देखता गया था। कभी हवेली की ओर और कभी फौजदार की ओर। कैसी नज़र थी वह ? फौजदार-सिंह अब भी उस नज़र को दिल में कहीं चुभती हुई महसूस करता है। लगता है कि कोई तेज़ सूई है जो उसके दिल को कुरेदती है। इस कुरेदन में एक सवाल उठता है—'फौजदार—! मेरा बदला ? लालाराम जिन्दा क्यों है ? ···क्यों ? ···'

फौजदारसिंह निरुत्तर है। सूई बराबर कुरेदे जा रही है। इधर कुछ दिनों से तो फौजदार को ऐसा महसूस होने लगा है जैसे यह सूई भीतर ही भीतर उसका सारा दिल नोच डालेगी ! खास तौर से उस दिन से यह कुरेदन और बढ़ गई है जिस दिन फौजदारसिंह को खबर मिली थी कि बिहारीसिंह मर गया !

बिहारीसिंह मर गया ! फौजदार का भाई। उसका लहू। उस मामले में सात साल की सज़ा हुई थी बिहारी को। लालाराम ने पूरी ताकत लगा दी थी कि बिहारीसिंह को लम्बी सज़ा मिले। उसने पुलिस को दसियों गवाह दिए थे, बीसियों आरोप तैयार करवाए थे और सैकड़ों रुपया वकीलों को दिया था।

फौजदारसिंह काफी दौड़-धूप करता रहा था, पर बिहारी के विरुद्ध इतने आरोप इकट्ठा हो गए थे कि वह बच नहीं सका। जिस दिन सज़ा सुनाकर उसे जेल ले जाया जा रहा था, उस दिन की तसवीर अब भी फौजदार की आंखों के सामने है···

निरीह, उदास और बेचैन नज़रें, लगातार अपमान की अनुभूति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

से कमजोर हो गया शरीर··· बिहारीसिंह जब कचहरी के बाहर आया था तो कैसी मरी-मरी चाल में चल रहा था ?···कितने अविश्वास से फौजदार की ओर देखा था उसने जैसे कह रहा हो— 'फौजदार मेरे भाई, मेरे लहू, मेरे मां-जाए,···तू मुझे इस हाल में देखते हुए भी ज़िन्दा है ? · और अगर तू ज़िन्दा है तो लालाराम क्यों ज़िन्दा है ?···'

मर गया बिहारीसिंह ! वह बेचैनी और अपमान झेल नहीं पाया। दो साल तक शायद वह जेल में जिन्दा रहकर लालाराम की मौत की खबर की प्रतीक्षा करता रहा होगा। पर नहीं मिली थी खबर। कैसे मिल सकती थी ? उसके मां-जाये भाई का लहू इतना ठंडा होगा, बर्फ की तरह—यह बिहारीसिंह ने सोचा भी न होगा ! इसलिए मर गया बिहारीसिंह !

खबर जब गांव में आई थी तो सन्नाटा फैल गया था, बिलकुल वैसा ही सन्नाटा जैसा बिहारीसिंह की गिरफ्तारी के वक्त फैला था। हर आंख और हर चेहरे पर एक निश्चित परिणाम उभर आया था— अब कुछ होकर रहेगा ! शायद फौजदारसिंह लालाराम को गोली से उड़ा देगा !···पर फौजदार, ठंडा लहू, किस तरह झेल गया था उस खबर को ?···जैसे बिहारीसिंह कोई था ही नहीं और अगर था तो फौजदार का लहू नहीं था !

कई दिनों तक लोग उसका चेहरा बड़े गौर से देखते रहे थे, वे चाहते थे कि फौजदारसिंह कुछ करे···कुछ करने का मतलब, लालाराम की हत्या !···

मगर कुछ नहीं किया फौजदारसिंह ने। वह उसी तरह ठंडा रहा। गरदन झुकाए हुए खेतों-खलिहानों पर घूमता रहा। बीमार बैल की तरह हवेली से बंधा रहा। अंधों की तरह अपमानभरी दृष्टियों को उपेक्षित करता रहा और बाज़ारू कुत्तों की तरह बिहारीसिंह की विधवा के हाथों सिकी रोटियां खाता रहा !

बिहारीसिंह की विधवा ! भगवती ठकुराइन ! भर जवानी में वैधव्य का भार ढोना पड़ा था उसे। कभी-कभी वह भी फौजदार की ओर बिल-कुल उसी तरह नज़रों में सवाल भरकर देखती थी, जिस तरह बिहारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देखा करता था— 'लालाराम ज़िन्दा है !···क्यों ज़िन्दा है ! तुम्हारे सगे भाई को मारकर भी ज़िन्दा है !'

और फौजदारसिंह घुटकर रह जाता था। सूई तेज़ी से मांस कुरेदने लगती थी। अंतड़ियों में कैद निश्चय उसे भीतर ही भीतर उमेठने लगता था और नीची, बहुत नीची नज़रें किए चुपचाप रोटी खाता रहता था फौजदार।

"लाला, एक रोटी और···" भगवती पूछती फिर रोटी थाली में डाल देती। ऐसा करते में सिर्फ थाली पर रोटी गिरने की ही आवाज़ होती। फौजदारसिंह सिहर उठता ! ओह ! कितना तीखा थप्पड़ !···पहले भगवती जब रोटी डालती थी तो उसके कंगनों की आवाज़ होती थी— मीठी, दुलारती हुई आवाज़, पर अब ! रोटी के थाली से टकरा जाने का कर्कश स्वर ! बस !

फौजदारसिंह को लगता, वह दुलारते स्वर वाली कंगनों की आवाज़ और भगवती मर गए ! क्योंकि बिहारीसिंह मर गया। मुरदों से घिरा हुआ है फौजदारसिंह। कुछ आवाज़ें ज़िंदा हैं—बदला !···बदला !··· बदला !···

आधे पेट उठ जाता था फौजदारसिंह ! भगवती नहीं पूछती थी रोटी के लिए। क्या पूछे ? उसका खयाल था कि वह मुरदों से घिरी हुई है !

मुरदे ! सारी हवेली में मुरदे ! थप्पड़ के जवाब में खामोश रहने वाले मुरदे, थूक को अमृत की तरह पी जानेवाले मुरदे, आग में चुपचाप झुलसकर समाप्त हो जानेवाले मुरदे !

असल में फौजदारसिंह ठंडा नहीं था। चम्पा ने उसे ठंडा कर दिया था। चम्पा !···बर्फ की तरह उजली, मासूम, मुलायम और खिली हुई···

फौजदारसिंह उसके आकर्षण में इस तरह बंधा हुआ था जैसे चम्पा औरत नहीं, नागपाश है। जब-जब बदले की आग में जलता हुआ फौजदार का हाथ रायफल की ओर बढ़ता, चम्पा उसे रोक लेती, "नहीं !···मैं क्या करूंगी ? तुम मुझसे किस जन्म का वैर ले रहे हो ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और रायफल उठाते-उठाते रुक जाया करता था फौजदार। कितनी ही बार ऐसा हुआ था और हर बार चम्पा उसके आड़े आ गई।

हाथ आगे बढ़ता है···

'नहीं !' चम्पा की चीख !

कितनी ही बार···

और हर बार एक रोक—चम्पा। मुलायम, मगर कठोर। रायफल और फौजदारसिंह के बीच चट्टान की तरह अड़ जाया करती थी वह···

उस दिन तो फौजदारसिंह रायफल उतारकर देहरी तक ही निकल आया था बिलकुल, पर चट्टान एकाएक ही आड़े आ गई थी।

"मत रोक, चम्पा !" बिफर पड़ा था फौजदार, "आज उस हरामी को जड़-वंश से खतम कर डालूंगा ! ···"

एक सन्नाटा खिंच गया था हवेली में। चम्पा, फौजदार के सामने, उसका रास्ता रोके हुए। एक ओर भगवती—बिहारीसिंह की सजीव आंखें और दूसरी ओर सहमा हुआ—महाराजसिंह ! बिहारीसिंह का इकलौता बेटा। तब सिर्फ तेरह साल का था वह। बिलकुल बिहारी जैसा। वही आंख, वही चेहरा, वही कद-काठ।

"मत रोक, बहू !" भगवती बोली थी।

चम्पा ने पलटकर देखा, उसकी आंखों में खुशी की एक कौंध थी, बिलकुल सुहागिन की आंख जैसी कौंध। वह समझ गई थी कि हमेशा की तरह फौजदारसिंह को फिर से उकसा दिया है भगवती ने ! पर भगवती से कुछ कहने का न तो साहस था चम्पा में और न रिवाज। उसने सिर्फ याचनाभरे नेत्रों से फौजदार की ओर देखा था, जिसके चेहरे की नसों में तनाव था और आंखें बाहर को उबली पड़ रही थीं।

फौजदारसिंह ने रायफल पर पकड़ में कुछ ढीलापन अनुभव किया था। हर बार चम्पा की यह नज़र उसके हाथों को नामर्द बना देती है··· सद्यः-विवाहिता की याचनाभरी आंखें, फौजदार को मोम की तरह पिघला डालती हैं···आज फिर···उसने अपने आपको मज़बूत करने की कोशिश की, मगर लगता है कि वह गलने लगा है··· कितने सवाल हैं चम्पा की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आंखों में ? कितने सपने ?··· एक घर, फूल-सा मुलायम बच्चा, खेतों से थककर लौटने पर फौजदार की स्वेद-बूंदों को पोंछ डालने वाली मुस्करा-हटें, हिल गया फौजदार···

"बहू, हट जा लाला के सामने से !" भगवती ने तीखे स्वर में चम्पा को आदेश दिया था, "ठाकुर के बेटे को माटी का ढेला मत बना चम्पा ! हट जा !···आज अपना करज उतारने दे फौजदार लाला को !"

चम्पा नहीं हटी थी ! वह रो पड़ी थी, "नहीं ! मैं इन्हें नहीं जाने दूंगी ! अगर इन्हें यों ही बीहड़ों में भेजना था, तो मुझे क्यों लाया गया !···क्यों ?"

फौजदार के हाथ कांप गए। भगवती की आंखों में लपटें पैदा हो गईं, "तूने इन्हें बिलकुल कायर कर दिया है !···तू ठकुराइन है या···"

"मत रोक चम्पा !" फौजदारसिंह बड़ी कठिनाई से बोल पाया। लगता था वह कहीं और से बोल रहा है, अपने-आपसे अलग होकर। वह नहीं चाहता था कि इस तरह बीहड़ों में जाना पड़े, पर इज़्ज़त-आबरू, बिहारीसिंह की इच्छा, बदला, समाज, माटी का धरम···सब चीजें फौजदार की इच्छा के विरुद्ध हैं। हर आंख चाहती है कि वह लालाराम को मार दे ! हर आंख उसपर लानत भेजती है कि लालाराम ज़िन्दा है। लालाराम, फौजदार का दुश्मन ! उसके भाई का हत्यारा !···

मगर चम्पा···इसने क्या कुसूर किया ? सच ही तो कहती है, अगर यों ही बीहड़ों में जाना था तो इसे ब्याह कर क्यों लाया फौजदार ने ?

"थू !" भगवती चली गई थी। घृणा, अविश्वास और क्रोध में कांपती-सुलगती हुई। उसके जाते ही चम्पा ने फौजदारसिंह के हाथों से रायफल छीन ली थी और फौजदारसिंह कुछ नहीं कर सका था। क्या कर सकता था ! चम्पा···नागपाश ! फौजदार के गर्म लहू में मिली हुई बर्फ ! हर बार यह बर्फ ही भारी पड़ती है !

पर कितने दिनों तक वह बर्फ फौजदार को ठंडा रख सकी ? कितने दिनों तक चम्पा का नागपाश उसे बांधे रख सका ?

बहुत थोड़े दिनों, क्योंकि फौजदारसिंह माटी का ढेला नहीं था। वह बीहड़ों की परम्पराओं में पला हुआ आदमी था। संस्कारित विशिष्ट-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ताओं में जीता हुआ। मानापमान की अपनी कसौटियों पर कसा जानेवाला आदमी! चम्पा की स्नेहभरी दृष्टि शायद उन घावों का मरहम पूरा नहीं कर सकती थी, जिन्हें सामाजिक रूप से फौजदारसिंह झेल रहा था। न चम्पा का नागपाश उस सैलाब को बहुत दिनों तक बांधे रख सकता था जिसे भगवती और महाराजसिंह घर में जन्म दे रहे थे।

एक दिन टूट गया था नागपाश! सैलाब उमड़ पड़ा और चम्पा की बर्फ लावे के नीचे घुटकर अस्तित्वहीन हो गई!

उस दिन फौजदारसिंह घर में घुसा तो हैरान रह गया। आंगन में तुलसी-चौक के करीब बैठी भगवती बिहारीसिंह की रायफल साफ कर रही थी। ठिठका रह गया फौजदार।

मिट्टी के तेल भरी एक कटोरी से फाहा डुबो-डुबोकर वह रायफल की नली और ट्रिगर को पोंछती इधर-उधर घुमा-फिराकर देखती। पास ही बैठा था—महाराजसिंह। धूल सने कपड़े, मजबूत शरीर, बिलकुल बिहारीसिंह···

फौजदार आगे बढ़कर कुछ पूछे, इससे पहले ही भगवती और महाराजसिंह बातें करने लगे थे···

महाराजसिंह पूछ रहा था, "मां, इसे क्यों साफ कर रही है?"

भगवती ने एक क्षण उसे देखा, फिर कहा, "अब जल्दी ही तू इस रायफल से काम लेने लगेगा न?"

"हां-हां, मैं रायफल लटकाकर काका की तरह खेत-खलिहान जाऊंगा और···"

"नहीं, बेटा!" भगवती कठोर स्वर में बोली, "तेरा काका तो कायर है! बोदा! उसकी तरह रायफल नहीं लटकाएगा तू। वह सिर्फ रायफल लटकाता है, चला नहीं सकता!"

"फिर?···फिर मैं कैसे लटकाऊंगा, रायफल?" सहज उत्सुकतावश महाराजसिंह पूछने लगा था।

"तू अपने बाप की तरह रायफल लटकाएगा।" भगवती ने ट्रिगर को दो बार खटकाकर देखा। जब वह नली पर फाहा फेरने लगी तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महाराजसिंह ने पूछ —"मां, इसमें क्या होता है ?"

"इसमें गोली होती है, बेटा।" भगवती ने मुसकराकर रायफल की नली पर हाथ तेज़ कर दिया, "जब खटका होता है तो धमाके के साथ गोली निकल पड़ती है।"

"और गोली से क्या होता है ?"

"गोली से किसीका जी जल जाता है, किसी का ठंडा हो जाता है।" भगवती ने जवाब दिया।

"तो तू मुझे गोली निकालना सिखाएगी, मां ?"

"हां।"

"और काका जानता है गोली निकालना ?"

"हां, पर वह कायर है !"

"कायर क्या होता है ?"

"कायर होता है वह, जो बैरी को ज़िन्दा देखकर भी ज़िन्दा रहे।"

"तो ज़िन्दा बैरी कौन है ?"

"लालाराम !"

"तो काका उसे गोली क्यों नहीं मार देता, वह मर जाएगा !"

"मैने कहा न, तेरा काका कायर है।"

"तो मैं भी कायर हूं ?"

"नहीं, बेटे !" भावावेश में भगवती ने रायफल एक ओर रखकर महाराजसिंह को गोदी में भर लिया, "तू कायर नहीं है ! ऐसा हो ही नहीं सकता ! तू इसी रायफल से गोली निकालेगा और मेरे जी की आग ठंडी करेगा !"

गोद में भिंचते हुए भी महाराजसिंह सवाल करता रहा, 'तो तेरे जी में आग लगी है, मां ?"

"हां !"

"तो मैं गोली निकालकर तेरी आग ठंडी कर दूंगा, मां !"

"मेरे बेटे !···मेरे महाराजसिंह !···बस, तेरे ही भरोसे जी रही हूं, बेटे !···सिर्फ उसी दिन के लिए जब तू यह आग ठंडी कर सकेगा !··· जब तू लालाराम को···" भगवती ने महाराजसिंह के माथे और गालों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

को कई-कई बार चूम लिया था। उसकी आवाज़ रुलाई की सीमा तक जा पहुंची थी।

···और एक ओर अब तक खामोश खड़े रहकर सुलगते हुए फौजदारसिंह पर जैसे किसी ने थूक दिया था।···

लालाराम! ···बदला! ···लालाराम! ···भगवती के जी की आग! ···बिहारीसिंह की इच्छा! ···लालाराम! ·· वह जैसे हर खयाल के साथ ज़हर पीता गया था। आंतों को काटता हुआ तेज़ ज़हर, दिल को कुरेदती हुई सूई, आंखों के आगे घूमता हुआ सिर्फ एक चेहरा—लालाराम!

वह तेज़ कदमों अपने कमरे में गया था, रायफल उठाई थी और आंधी की तरह वेगपूर्वक लालाराम की हवेली की ओर दौड़ पड़ा था। वहां पहुंचकर कई आवाज़ें दी थीं उसने— "लालाराम! ·· कहां है लालाराम?···" वह पागलों की तरह चीखता हुआ घर में घुस गया था। कुछ औरतों की चीखें उठी थीं, बच्चे रोए थे और गोलियों की लगातार आवाज़ें आई थीं···उसी वेग से वह लालाराम के घर से बाहर आया था—"कहां है, लालाराम! हरामी! आज उससे सब हिसाब बराबर करूंगा···"

फौजदारसिंह के सामने एकाएक ही लालाराम के दो नौकर आ गए थे। गुर्राया था वह, "कहां है लालाराम?"

वे बदहवास उसे देखते ही रह गए थे। कुछ कहें, इसके पूर्व ही फौजदार की रायफल ने फिर गोलियां उगली थीं और वे दोनों चीखें मारते हुए धरती पर लोट गए थे।

गांव में सन्नाटा! औरतें, मर्द और बच्चे सहमकर अपने-अपने घरों में समा गए। वहशियों की तरह लालाराम का नाम ले-लेकर चीखता हुआ फौजदारसिंह बीहड़ों की ओर भाग गया था···भागता ही गया था ··मीलों हांफता हुआ···शाम हुई थी, फिर रात और फिर दूसरा दिन···वह बीहड़ों के ऊंचे-नीचे रास्तों पर उतरता-चढ़ता बढ़ता ही गया था। एक ऐसे रास्ते पर जो कभी खत्म नहीं होता! ···जो सिर्फ शुरू होता है!

× × ×

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लालाराम ज़िन्दा बच गया था उस दिन। फौजदारसिंह सुलगता हुआ अब तक बीहड़ों में घूम रहा है। पुलिस के कई दस्ते उसकी तलाश कर रहे हैं।

मगर कब तक बचेगा लालाराम ?···दांत भींचकर फौजदार ने सोचा।

दूर अंधेरे में एक चमक पैदा हुई और फौजदारसिंह ठिठक गया।

कौन हो सकता है वहां ? खलिहान पर कोई किसान ? शिव-मंदिर का पुजारी बालकराम ?···या पुलिस ?

उसने रायफल कन्धे से उतारकर हाथ में ले ली। वहीं रुका कुछ देर उस ओर देखता रहा, जिधर अभी-अभी चमक हुई थी और अब गायब हो चुकी थी।

कोई भी हो सकता था वहां। यह भी संभव था कि फौजदार के सोचे हुए लोगों में से कोई न हो। चमक का कारण कुछ और भी हो सकता है। उधर अहीरों के कुछ घर हैं। उनके जानवर बाहर बंधे रहते हैं और रखवाली के लिए रात को एक-दो बार उठकर उन्हें देखना होता है।

फौजदारसिंह ने कई पहलुओं से सोचा और हर बार इस नतीजे पर पहुंचा कि उधर चाहे जो हो, पुलिस नहीं हो सकती। थाना गांव के बायीं ओर है और यह है दायां। वैसे भी पुलिस इस इलाके में नहीं आती। उसे इधर से कोई सन्देह नहीं रहता। इस दिशा में मैदानी इलाका है, इक्का-दुक्का घर हैं और शिव-मन्दिर है। पुलिस जानती है कि बागी ऐसे खुले इलाके में आना पसन्द नहीं करता।

झाईं का स्वर कुछ अधिक तेज़ हुआ तो वह चौंक पड़ा। इस अंधेरे में ये आवाज़ें कैसी लगती हैं ? जैसे तेज़ धारवाले आरे से कोई आदमी वातावरण की शांति को चीर रहा हो। एक बार बरबस ही फिर से लालाराम उसे याद हो आया। बिलकुल इसी तरह फौजदारसिंह की सुखी, शांत जिन्दगी को लालाराम ने तेज़ आरे से चीर डाला था।

फौजदारसिंह भी इसी तरह लालाराम की शांत ज़िन्दगी को चीखों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और अंधेरे में डुबा देना चाहता है ! उसने उसके तीनों लड़कों को मार दिया है··· बचा है सिर्फ लालाराम । उसने बेबसी से भरी एक गहरी सांस ली—न जाने कब वह यह अन्तिम इच्छा पूरी कर सकेगा । पांच साल तो हो गए हैं, अब तक फौजदारसिंह लालाराम तो दूर उसकी परछाई तक भी नहीं पहुंच सका है ।

आज, बहुत दिनों बाद वह अपने गांव की ओर जा रहा है···सुना है, उसके गांव खांडोली में पड़ी रहनेवाली प्लाटून किसी और दौरे पर चली गई है ।

वहां कोई नहीं होगा । होंगे भी तो थाने के दो-चार आदमी । उनसे फौजदारसिंह भुगत सकता है । वह आगे बढ़ने लगा । चम्पा से भेंट, लालाराम से बदला···उसमें उत्साह था । आज नहीं तो कभी नहीं !

बारिश का मौसम ! पहले दौर में ही बीहड़ों की माटी में फिसलन पैदा हो जाती है । तिसपर अन्धेरे में डूबे रास्ते । आदमी व्यर्थ ही आंखें फैला-फैलाकर देखने की कोशिश करता रहे, कुछ नहीं दीखता । न नीचाई-ऊंचाई का पता चलता है, न फिसलन या कीच से भरे गढ़ों का ।

फौजदारसिंह को इस सारे रास्ते में बहुत संभलकर धीरे-धीरे चलना पड़ा है । गिरोह से विदा होते ही बारिश हो गई थी । जब चला था तब आसमान साफ था—नीली साड़ी की तरह और थोड़ी ही देर में उसपर बरसाती घटाओं के छोटे-बड़े धब्बे उभर आए थे और फिर ये सारे धब्बे एकरंग हो गए थे । थोड़ी ही देर में आसमान का सांवला रंग बूंदें बनकर धरती पर गिरने लगा था ।

जूते कीचड़ में सन गए हैं । हर कदम के साथ इतनी मेहनत पड़ती है जैसे एक बोरा उठाना पड़ रहा हो । पच्चीस-तीस कदमों के बाद जूतों से चिपटे कीचड़ को छुटाना पड़ता है । वरना या तो जूते छोड़ने पड़ेंगे या चलना बन्द करना होगा ।

कभी-कभी पैर किसी पानी भरे छोटे-मोटे गढ़े में चला जाता है और कभी मिट्टी धोखा देकर फिसला देती है । ऐसे हर मौके पर अपने आपको कोसते हुए बड़ी कठिनाई से खुद को संभाले रखना पड़ता है ।

टार्च जलाई नहीं जा सकती !···पर टार्च जलाए बगैर वक्त का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पता कैसे चलेगा ? न जाने कितना वक्त हो गया हो ? बहादुरा ने कहा था, "तीन बजने से पहले-पहले आ जाना। गिरोह के बचाव के लिए ज़रूरी है कि हम यह मैंदानी इलाका छोड़कर बीहड़ में कहीं और निकल चलें !"

"ठीक है !" फौजदार बोला था। रायफल कन्धे पर लटकाई थी और खांडोली की ओर चल पड़ा था। तब से चलता ही जा रहा है···

कहीं तीन बज तो नहीं चुके ? अंधेरे रास्ते और अकेलेपन ने इस एहसास को बढ़ा दिया है कि वक्त काफी निकल चुका है।

टार्च ?

टार्च नहीं जलाई जा सकती। शायद खांडोली की सीमा लग चुकी है। अभी-अभी जो चमक पैदा हुई थी, वह इस बात का गवाह थी कि फौजदार गांव की कमर तक पहुंच गया है।

फिसलन !·· फौजदार अनुमान नहीं कर सका। पैर किसी गढ़े में चला गया था और जूता फिसल पड़ा।

क्या ज़िन्दगी है ! उसने अपने आपको कोसा। अनचाहे ही फिर से लालाराम स्मृति में उभर आया—कमीना ! फौजदार तो उसी दिन हिसाब साफ कर लेना चाहता था, पर बच गया कम्बख्त ! तकदीर अच्छी थी उसकी। वह मुरैना गया हुआ था। घर में सिर्फ बच्चे थे सो फौजदार की बन्दूक के शिकार हो गए थे।

२

शिव-मन्दिर के बरामदे में दिया टिमटिमा रहा था। पीली और क्षीण-सी रोशनी के कुछ टुकड़े बरामदे के मोटे-मोटे स्तम्भों से टकराते हुए कच्चे रास्ते पर पड़े हुए थे।

फौजदारसिंह ने यहां आते ही राहत की सांस ली। बड़ी देर बाद उसने पहली बार महसूस किया कि आंखें हैं और सहारा दे सकती हैं। रोशनी के इन छोटे-छोटे टुकड़ों में गलिहारा काफी दूर तक दीख रहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

था। चिकनी माटी भरे गलिहारे में कई जगह पानी भरा हुआ था। ज़ाहिर था कि खांडोली में अभी-अभी वर्षा होकर थमी थी।

नमी में डूबे हुए हवा के झोंके उठते और फौजदार की कनपटियों को छूते हुए इधर-उधर निकल जाते। एक फुरहरी सारे शरीर में उठ आती। रायफल पर कसी अंगुलियों के पोर कुछ-कुछ जमने-से लगे थे। देर से कीचड़ और पानी में पड़ते रहने के कारण पैरों की चमड़ी निर्जीव-सी होने लगी थी···पर फौजदारसिंह इस सबके बारे में बहुत ज्यादा नहीं सोच रहा था। असल में बीहड़ों की बागी ज़िन्दगी जीकर यह सोचने की गुंजाइश भी नहीं होती। वह सोच रहा था—क्या लालाराम के यहां ही जाया जाए ? · या चम्पा से भेंट कर ली जाए ?···

बारिश की यह नम और मादक हवाएं सारे गांव को सन्नाटे में डुबोए हुए हैं। ऐसे में अगर वह लालाराम के यहां चला भी गया तो कोई बहुत बड़ा खतरा नहीं होगा। उसने सोचा। मन्दिर से दो रास्ते हैं। फौजदार को उनमें से कोई एक चुनना था। एक रास्ता उसे हवेली की ओर ले जाता दूसरा लालाराम के घर की ओर !

बहुत देर तक सोचने का गुंजाइश नहीं है। उधर बहादुरा प्रतीक्षा कर रहा होगा। जल्दी ही फौजदारसिंह ने निर्णय कर लिया और वह लालाराम के बरामदे की ओर बढ़ चला। हर कदम सतर्कता के साथ दृढ़तापूर्वक बढ़ता हुआ···

अब फौजदारसिंह के सामने कोई द्विविधा नहीं रह गई थी।

स्कूल के टापरों के पास पहुंचकर वह रुक गया। एक बार फिर से वह सारी योजना पर विचार कर लेना चाहता था। दस-बारह कदम दूर ही लालाराम का बरामदा है। इस समय अंधेरे में डूबा हुआ। यहां से थाना दो सौ कदम होगा। अगर गार्ड लगा होगा तो वह किधर हो सकता है ? उसने सोचा।

शायद बरामदे में। यह भी मुमकिन है कि वे बरामदे में न हों। एकाएक वह चौंक गया। ठीक लालाराम के बगलवाले घर में रोशनी हो रही थी।

शायद ताशबाज़ी हो रही है। फौजदारसिंह जानता है, कि पटवारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

के उस घर में गांव के कुछ लोग रोज़ ताश खेलते हैं। कुछ दर्शक भी होते हैं।

हो सकता है कि पुलिसवाले भी उसी घर में जमा हों। वह दबे कदमों आगे बढ़ा। दीवारों के करीब सरकता हुआ। पहले पटवारी के घर में लगी किवाड़ी से झांककर वह देख लेना चाहता था कि वहां कौन-कौन हैं।

रायफल पर पकड़ मज़बूत हो गई। वह हर क्षण तैयार था। किसी भी पल कुछ भी घट सकता है, वह अच्छी तरह जानता था।

उसने किवाड़ी की सांस में अपनी आंखें गड़ा दीं। सफलता की मुसकराहट उसके होठों के गिर्द तिर आई। ओह ! आज तकदीर उसका साथ दे रही है···आज लालाराम नहीं बच सकेगा ! वह सांस में आंखें टिकाए हुए सोच रहा था। उसका अनुमान कितना सही निकला ! गांववालों के अलावा तीन-चार सिपाही भी वहां थे। उनकी रायफलें ? ···उसने भीतर की हर चीज़ का बारीकी से निरीक्षण किया। रायफलें कहीं नही दिखीं ! और वह समझ गया कि सिपाही रायफलें नहीं लिए हुए हैं !

रायफलें न होने पर वे बिलकुल बेकार हैं ! अगर लालाराम की हवेली में फौजदार भीतर तक चला गया तो भी ये उसका कुछ न कर सकेंगे ! उन्हें सिर्फ अपनी चिन्ता करनी होगी। वे अपने आपको बचाने के लिए छुप जाएंगे !

उसने तसल्ली की एक सांस लेकर आंखें किवाड़ों से हटा लीं। दूसरे ही क्षण वह सधे कदमों से लालाराम के बरामदे की ओर बढ़ रहा था···

वे कुछ ओढ़े हुए हैं। शायद लिहाफें। क्या उन्हें देखकर मारना चाहिए ?

नहीं ! फौजदारसिंह ने रायफल साधी। अन्धेरे में निशाना ठीक से नहीं लग सकेगा। टार्च जलाकर उसने एक कोने में रख दी। बरामदा उजाले के एक फव्वारे में नहा गया। अब सब कुछ साफ देखा जा सकता है ! तुरन्त ! देर नहीं करना है !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रायफल का निशाना पहली चारपाई की ओर लगा। फौजदार ने एक झटके से उस सोए हुए आदमी के ऊपर से लिहाफ उछाल फेंकी—धांय !···

एक चीख और शोर !

बिलकुल समय नहीं था। पलक मारते लोग आ जाएंगे ! फौजदार ने दूसरी चारपाई से लिहाफ़ उतार फेंकी और दूसरा फायर किया। फिर एक चीख उठी···

पटवारी के दरवाज़े भड़ाम् से खुले। लालाराम की हवेली के भीतर से कुछ औरतों की चीखें और शोर आया। फौजदारसिंह ने टार्च बन्द की और फुर्ती से बाहर निकल आया। पटवारी के घर से कुछ लोग बाहर आने लगे थे। अंधेरे में फौजदार ने रायफल उसी दिशा में सीधी की और एक फायर कर दिया। एक चीख ! और लोगों के भागने-चिल्लाने की आवाज़ें !

फौजदारसिंह बीहड़ों की ओर भागने लगा। फिसलता, गिरता, संभलता !···गलिहारे और शिव-मन्दिर ! वह भागता ही गया ! थोड़ी ही देर में बीहड़ों में उतर गया था वह !

शोर ! शोर !···अन्धेरा··उजाला !···चीखते हुए लोग,···दौड़ते पुलिस मैन··सहमे और डरे हुए लोग !···कांपती हुई औरतें···!

यह था कुल खांडोली गांव !

फौजदारसिंह बीहड़ों में उतर चुका था और कुछ ही देर में पुलिस का एक दस्ता भी उसके पीछे-पीछे बीहड़ों में चला गया था।

गांव के हर घर में रोशनी के जुगनू उग आए थे। पर बड़ी देर तक सिर्फ शोर ही होता रहा था। लोग अपने-अपने घरों में दुबके ही रहे थे। वे समझ चुके थे कि फौजदार ने गांव में कोई गुल खिलाया है, पर क्या है वह ?·· क्या लालाराम को मार गया वह ?···या इस बार कोई और उसकी रायफल के सामने आ गया ?···

काफी देर बाद वे बाहर निकले थे और लालाराम की हवेली पर एकत्र होने लगे थे जहां से लगातार कई कंठों में विलाप के स्वर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उठ रहे थे ।

लालाराम जिन्दा था । बरामदे की तीसरी चारपाई पर सो रहा था वह । फौजदार तीसरी चारपाई का निशाना नहीं ले पाया · पहली और दूसरी चारपाइयों पर सो रहे थे लालाराम के बहनोई और दामाद !···अब दोनों नहीं थे । उनकी जगह अब उनके निर्जीव शरीर पड़े थे । लिहाफें और बिस्तर खून में नहाए हुए···

सहानुभूति से लोगों ने रोते-बिखलते लालाराम की ओर देखा । झुर्रियों से भरा हुआ, पीलिया के मरीज़-सा चेहरा । लगता था कि लालाराम आदमी नहीं, सिर्फ चाबीवाला खिलौना रह गया है । रोज़ जागनेवाला, घर में पड़ा रहनेवाला, सो जाने वाला और दूसरे दिन फिर जाग जानेवाला··पिछले चार सालों से लालाराम की कुल जिन्दगी यही थी । फौजदारसिंह की प्रतिशोधाग्नि ने उसे भीतर ही भीतर जला डाला था । रक्त से खाली रोगी शरीर, मृत्युभय से आतंकित चेहरा··· यानी लालाराम !

वह रो रहा था । उसने दीवार से सिर पटक लिया था, कई-कईबार ! लोग उसे थामने की कोशिश कर रहे थे । भीतर दरवाजे के पीछे औरतें विलाप कर रही थीं । वे तरह-तरह से फौजदारसिंह को कोस रही थीं ।

लोगों ने घृणापूर्वक उन सिपाहियों की ओर देखा जो एक ओर गरदन झुकाए खड़े हुए थे···

"उसका नाश जाए !···उस कमीने ने मुझे तबाह कर डाला !··· वंश-नाश !···कमीना उसके शरीर में कीड़े बिलबिलाएंगे !···" लालाराम और उसके घर की महिलाएं रोते-चीखते हुए फौजदारसिंह के नाम बद्-दुआएं उगल रही थीं ।

कुछ लोगों ने लालाराम को समझाया, "बस करो, भाई, भगवान् सब ठीक करेगा···"

"भगवान् ?···" लालाराम चीखा, "कहीं नहीं है, भगवान् ! सब जगह फौजदार है । कुत्ता !" उसने लोगों के हाथों से फिसलकर लाशों के खून-नहाए शरीर पर अपना सिर ठोक लिया था । उसका चेहरा और कपड़े भी खून में भर गए थे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सारा गांव किसी भूकम्प से तबाह हो गया है। स्त्रियां, पुरुष और बच्चे रो रहे हैं···लोग हैं, पर मृतवत्···शायद सब कुछ धरती में समा गया है···यही है खांडोली गांव! हरी-भरी धरती और फसलों का गांव!

सुबह हुई। जागती हुई सुबह!

लालाराम के बरामदे से दोनों लाशें हटाकर गाड़ी में डाली गईं। पोस्टमार्टम के लिए वे शहर ले जाई जाएंगी।

लालाराम और घर की औरतें उस गाड़ी को पकड़ने लगीं। जैसे-तैसे पुलिस और ग्रामीणों ने उन्हें हटाया।

रात को फौजदारसिंह का पीछा करने गया पुलिस-दल वापस आ गया था। खाली हाथ। बिलकुल उसी तरह जिस तरह पिछले चार सालों से आ रहा था।

लाशें ढोने वाली गाड़ी बीहड़ों के कच्चे रास्ते पर उतर गई। पुलिस ने जांच-पड़ताल शुरू की। किस तरह फौजदारसिंह आया, कितने बजे होंगे? पुलिस गार्ड उस वक्त कहां था? वगैरा, वगैरा। दोपहर सूरज चढ़े तक कार्यवाही होती रही। दस-बीस गवाहियां हुईं, रोज़नामचे पर कार्यवाही चढ़ी और दरोगा जी दो सिपाही साथ लेकर फौजदार की हवेली पर जा पहुंचे।

महाराजसिंह बरामदे में ही था। फौजदारसिंह की फरारी के सालों में बहुत कुछ सीख चुका है। यह भी कि गोली कैसे निकलती है और यह भी कि जी की आग कैसी होती है। लालाराम के घर पर घटी रात-वाली घटना के बारे में उसे मालूम था, पर पुलिस आएगी यह नहीं सोचा था। दरोगा जी को जैसे ही देखा अदब से खड़ा हो गया। रस्सी बट रहा था। खाली वक्त में रस्सी बटना सबसे अच्छा काम है। उसने खेतों में सन के बहुत-से पेड़ लगा रखे हैं।

दरोगा जी चबूतरे पर आ गए। महाराजसिंह ने लपककर एक ओर पड़ा मूढ़ा उनके सामने रख दिया, "बैठिए, साब!"

दरोगा जी बैठ गए। पूछा, "ठकुराइन कहां है?"

"भीतर।" महाराजसिंह ने उतना ही संक्षिप्त जवाब दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

"तुझे मालूम है फौजदार रात को गांव में वारदात कर गया है ?"

"हां।"

"घर भी आया था क्या ?"

"नहीं !"

"बने मत ! ठीक-ठीक बता।"

"मैं ठीक कह रहा हूं, साब। जब से बागी हुए हैं, इधर कभी नहीं आए।"

"हूं।" दरोगा जी ने बेंत हथेली पर बजाया। थप्प-थप्प की धीमी-सी ध्वनि हुई। जब-जब उन्हें सवाल नहीं सूझता है, वह ऐसा ही करते हैं। कुछ देर की चुप्पी के बाद बोले, "ठकुराइन को बुलाओ।"

महाराजसिंह ने कुछ नहीं कहा। एक बार बड़ी तीखी नज़र से दरोगा जी को देखा, फिर भीतर चला गया।

पास खड़े सिपाही ने बुदबुदाकर कहा, 'हजूर, इस लौंडे के लच्छन भी ठीक नहीं लगते। ये भी साला···"

"बदमाश हैं, साले !" दरोगा ने कह दिया।

थोड़ी देर में महाराजसिंह वापस आ गया। दरोगा कुछ पूछे, इससे पहले ही उसने कहा, "भीतर पौर में बैठी हैं। जो पूछना हो, पूछ लो।"

दरोगा को यह व्यवहार विचित्र लगा। अपमानास्पद भी। जब ठकुराइन को बुलाया है, तो उसे दरोगा के सामने आना चाहिए। वह बीहड़ों में नया-नया आया है। यहां के तौर-तरीकों से गैर-जानकार है। कहने लगा, "सामने क्यों नहीं आती ?"

"परदा करती है, साब !' महाराजसिंह ने कहा। "आप जो भी पूछेंगे, बता देंगी।, पर सामने आना धरम के खिलाफ है।"

दरोगा कुछ कहने वाला था, पर दीवान का इशारा पाकर चुप हो गया। दीवान ने हौले से उसकी पीठ पर हथेली दबा दी थी और कह रहा था, "ठीक है। बड़ी ठकुराइन हैं या छोटी ?"

"बड़ी।" महाराजसिंह ने जवाब दिया। दीवान ने उसके चेहरे की ओर देखा। लगा कि वह कार्यवाही सह नहीं पा रहा है। उसके होंठों और ठोढ़ी के आसपास कुछ और दाढ़ी की रेखें निकल आई हैं और वह

Library

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मानापमान की स्थिति महसूस करने के काबिल हो गया है।

दीवान इस इलाके का रहने वाला है। जानता है कि फौजदारसिंह का घर कैसा है और इस माटी में कैसी फसल पैदा होती है। पुलिस में नौकरी करते-करते उसे बीस साल हो गए हैं। इन बीसों साल में उसने बीहड़ों का मौसम देखा है। किस तरह ज़रा-ज़रा-से मामलों को लेकर आदमी बागी हो जाता है, यह वह अच्छी तरह जानता है। दरोगा को उसने इशारा देकर संभाल लिया था, वर्ना बात बढ़ते क्या देर लगती है।

दरोगा चुप था। दीवान ने न जाने क्या सोचकर उसे इशारा किया है।

महाराजसिंह एक ओर खड़ा प्रतीक्षा कर रहा है कि वे कुछ पूछें। भीतर से भगवती के खांसने की आवाज़ उठती है।

थोड़ी देर बाद दीवान बोला, "बड़ी ठकुराइन को मालूम ही होगा कि रात को लालाराम के बहनोई और दामाद को मार गया फौजदार··"

"हां।" एक अक्खड़-सा जवाब भीतर से फिंका।

"क्या वह तुम लोगों के पास आया था ?" दरोगा ने बीच में ही सवालों की कड़ी पकड़ ली।

"नहीं !"

"झूठ बोलने से कोई फायदा नहीं होगा। हमें पक्का पता लगा है कि फौजदार पहले हवेली पर आया था। यहीं से वह लालाराम···"

दरोगा जी का प्रश्न अधूरा रह गया। भीतर से भगवती की कड़कती हुई आवाज़ आई, "जब तुम्हें मालूम है तो यहां पूछने के लिए क्यों आए हो ?"

दरोगा जी सकपका गए। महाराजसिंह मुसकराया और रस्सी बटने लगा। कुछ पलों के लिए चुप्पी फैल गई। बहुत बदतमीज़ औरत है ! दरोगा सोच रहा था। दीवान जी को लगा कि बात बढ़ जाएगी।

"देखो, ठकुरानी ! ठीक से जवाब दो।" दीवान ने कहा, "सरकारी कार्यवाही में दखल करना ठीक नहीं है। हम हुक्म के बन्दे हैं। कानून

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

की लपेट बुरी होती है। ठीक-ठीक बताओ, फौजदारसिंह यहां आया था या नहीं?"

"कह तो दिया कि नहीं आया था।"

"पर हमें खबर मिली है कि "

"अगर तुम्हें खबर मिली है तो फिर हमसे क्यों पूछते हो?" ठकुरानी गुर्राई, "अगर आ भी जाएगा तो हम उसका क्या कर सकते हैं?"

'बात ठीक है'। दीवान ने सोचा, अगर फौजदार घर में आ भी जाएगा तो ये लोग उसका क्या कर सकते हैं। पर यहां सरकारी कार्य-वाही पूरी करने का प्रश्न था। लालाराम के घर पर दो कत्ल हुए हैं। कत्ल फौजदारसिंह ने किए हैं। पुलिस ने इस सिलसिले में क्या किया, यह तो रिकार्ड पर होना ही चाहिए। यहां आना इसी रिकार्ड के सिल-सिले में है। और रिकार्ड की बात रिकार्ड पर होनी चाहिए, इसलिए दीवान ने पूछा, "तुम झूठ बोल रही हो। तुम लोग मुलज़िमों को घर में छिपाते हो और पुलिस से झूठ बोलते हो, इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा।"

जवाब में सिर्फ खांसने की आवाज़ आई। महाराजसिंह ने रस्सी बटना बन्द कर दिया।

दरोगा ने कहा, "अगर आगे कभी···"

"हमसे कहने की क्या बात है।" भीतर से भगवती ने तेज़ चुभती हुई आवाज़ में जवाब दिया, "ज़नानियों पर धौंस-दबका डालने से क्या फायदा! आप मार डालो, फौजदारसिंह को! कौन रोकता है!"

दरोगा बुझ गया। वह गाली बकना चाहता था, पर दीवान हर बार कन्धा दबा देता है।···मगर इस बार स्वयं को बहुत संयत नहीं कर सका वह। मूढ़े से उठा और चीखकर बोला, "तो सुन लो, ठकुराइन! हम फौजदार को तो ठिकाने लगाएंगे ही, साथ में तुम लोगों को भी जेल की हवा खानी पड़ेगी! बदमाशी की भी हद होती है। सरासर जुर्म करके तुम लोग बदतमीज़ी से पेश आते हो!"

महाराजसिंह को जैसे किसी ने तमाचा मार दिया। वह तिलमिला-कर उठ बैठा। उसने कहा, "बदतमीज़ी की बात नहीं है साब! काका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जुरम कर रहा है तो आप लोग उसे गोली मार दो। बार-बार हम लोगों को क्यों···"

बात अधूरी रह गई। दरोगा ने झपटकर महाराजसिंह की पीठ पर बेंत जमा दिया, "चुप बदमाश !···कमीने !···दिन-दहाड़े साले जुर्म करते हैं और ठीक से बात करने को तैयार नहीं !"

महाराजसिंह की चीख ठकुराइन ने सुन ली। कौंधकर बाहर आ गई। अब उसके चेहरे पर घूंघट नहीं था, न लज्जा या संकोच की कोई रेख। उसने गरजकर कहा, "औरतों और बच्चों पर ही बहादुरी जताते हो हज़ूर !···वह बीहड़ों में घूम रहा है, उसके पास क्यों नहीं जाते ! जाओ, उसपर बहादुरी दिखाओ ! उसके हाथ में भी मारक थ्री है, तुम्हारे हाथ में भी है ! कौन रोकता है, मार दो उसे !"

दरोगा इस एकाएक घटे दृश्य से अवाक् खड़ा देखता ही रह गया। अजीब औरत है ! अब तक परदे में बात कर रही थी और अब इस तरह बाहर, सामने आ गई है !···लज्जा, संकोच, भय—कुछ भी तो नहीं है उसकी आंखों में !

दीवान जी ने कहा, "आइए, साब ! इन कमीनों के मुंह लगने से क्या फायदा !"

और वे सब चबूतरे से नीचे उतर गए। बीच में एक बार पलटकर दीवान ने देखा भी था। भगवती महाराजसिंह की पीठ सहला रही थी और महाराजसिंह उन्हीं की ओर देख रहा था···तेज, कौंधती हुई नजर से···

इसी तरह डाकू बन जाते हैं ये लोग ! दीवान ने सोचा और गरदन फिरा ली।

३

हमेशा की तरह यह खबर भी खांडोली और आसपास के गांव में पर लगाकर उड़ गई कि फौजदारसिंह लालाराम के बहनोई और दामाद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दोनों की हत्या कर गया !

पचासों टिप्पणियों और रंगों के साथ यह खबर कई दिनों तक चौपालों और अलावों पर चर्चा का एकमात्र विषय बनी रही।

लालसिंह को सारी घटना उस समय मालूम हुई जब वह एक फौजदारी के मामले की तारीख से निबटकर गांव लौट रहा था। कचहरी के दरवाज़े से बाहर आया ही था कि खांडोली के पटवारी से मुलाकात हो गई, "सुना तुमने ? फौजदारसिंह ने इस बार लालाराम के बहनोई और दामाद को गोली से उड़ा दिया !"

लालसिंह हैरान-सा उसका मुंह देखता रह गया। न तो कुछ पूछ ही सका और न आश्चर्य व्यक्त करने पाया। लगा कि किसी ने आंतों पर घूंसा जड़ दिया है। न तो वह बोलने की स्थिति में है, न सोचने-समझने की।

पटवारी ने उसकी प्रतिक्रिया सुनने की प्रतीक्षा नहीं की। उसके भीतर बैठी खबर एकाएक ही लालसिंह को सामने पाकर उबल पड़ना चाहती थी। बातों की अपच का मरीज़ है वह। उसने शुरू से अन्त तक सारा किस्सा बयान कर दिया। साथ में दस-पांच ज़ायकेदार मोड़ भी जोड़ दिए।

लालसिंह चुपचाप सुनता रहा। बीच में उसने एक बीड़ी सुलगाई और 'हूं', 'हां-हां', 'फिर' कहता हुआ कश खींचता-छोड़ता रहा।

घटना सुनाकर पटवारी ने टिप्पणी की, "अब तो अति हो गई है, भाई ! लालाराम के नाते रिश्तेदार सभी तो खत्म हुए जा रहे हैं, अब भी फौजदार ठाकुर की आत्मा तृप्त नहीं हुई !"

लालसिंह वैसा ही चुप। इस बार न उसने समर्थन किया न विरोध। बीड़ी बुझ गई थी इसलिए कान पर खुरस ली।

"तुम उसे समझाते क्यों नहीं ?" पटवारी ने हमदर्दी के साथ कहा, "तुम कहोगे तो शायद मान जाएगा। आखिर तुम उसके बड़े बहनोई ठहरे !"

"हूं।" लालसिंह यह कहकर चुप हो गया। असल में वह नहीं चाहता था कि इस सवाल के जवाब में कुछ अधिक कहा जाए। यह सवाल उन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सभी के लिए पेचीदा है जिनसे फौजदार की रिश्तेदारी है। अभी लाल-सिंह यह कह दे कि वह समझाएगा या कई बार समझा चुका है तो अपरोक्ष रूप से यह स्वीकार लेगा कि फौजदार से वह मिलता-जुलता है। और फौजदार से सम्बन्ध रखने का मतलब है, पुलिस की मार-पीट मोल लेना। लालसिंह स्वभाव से ही ठंडी तबीयत का आदमी है। वह व्यर्थ ही उलझन में नहीं पड़ना चाहता। फौजदारसिंह या उस जैसे किसी भी अपराधी से किसी तरह जुड़े रहना उसे पसन्द नहीं है ··पर अब लाचार है। अनचाहे ही फौजदार जैसे डाकू से जुड़ गया है वह। पुलिस की हमेशा उसपर नजर रहती है। कई-कई बार तो पूछताछ ऐसा रुख अपना लेती है कि सह पाना कठिन हो जाता है।

अब फौजदारसिंह ने एक नई वारदात कर डाली है। इस खयाल भर से सिहर उठा है लालसिंह। गांव पहुंचते ही उससे पूछताछ की जाएगी। व्यर्थ के प्रश्न होंगे, धमकियां मिलेंगी, लानत-मलामत होगी, मुमकिन है एक-दो तमाचे भी पड़ जाएं।

पटवारी ने समझ लिया कि लालसिंह खुश्क हो गया है, वह उसका स्वभाव जानता है। फौजदारसिंह जितना दिलवाला है, उसका बहनोई उतना ही दब्बू और डरपोक! न जाने कैसे पैदा हो गया ठाकुरों में! उसने लालसिंह की खस्ता हालत देखी तो 'राम-राम' कह किनारे हो गया।

लालसिंह ने कान पर टंगी बीड़ी की ठूंठ होठों में भींचीं, साफा संभाला और एक तीली जलाकर फिर से बीड़ी में छुआ दी। थोड़ी देर निरर्थक ही खड़ा रहा फिर ढीले कदमों गांव की ओर चल पड़ा। अधिक दूर नहीं है। यही कोई छह-सात मील। मिली तो रास्ते में बस ले लेगा, न मिली तो पैदल शाम तक पहुंच ही जाएगा।

मगर बहुत अशांत हो उठा है लालसिंह। दिलो-दिमाग सभी कुछ बेतरतीब! फौजदार ने फिर से वारदात कर डाली, अब फिर से लाल-सिंह को थाने में तलब किया जाएगा, दसियों सवाल पूछे जाएंगे, दस-पांच गालियां बकी जाएंगी ··और··

एक झुरझुरी लालसिंह के शरीर में व्याप गई। उसे याद आई तीन माह पहले घटी घटना। लालसिंह ने कुछ भी नहीं किया था। सिर्फ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

फौजदार से यों ही एक गांव में भेंट हो गई थी उसकी। वह किसी बरात में गया था और फौजदार बहादुरा के गिरोह के साथ न जाने कहां से उस गांव जा पहुंचा था। जब लोगों ने उसे खबर दी थी कि लालसिंह भी इसी गांव में आया हुआ है तो वह लालसिंह से भेंट करने पहुंच गया था। लालसिंह बिलकुल नहीं चाहता था कि उससे मिले, पर किया भी क्या जा सकता था! फौजदार बरात के डेरे पर ही पहुंच गया था···

गाना हो रहा था उस वक्त। मुरैना से एक तवायफ कन्यापक्ष की ओर से खास तौर पर बुलाई गई थी। बड़े अच्छे गीत गाती थी वह। आल्हा सुनाने में तो उसका जवाब ही नहीं था। जाजमों पर बैठे बराती मस्त हो गए थे कि एकदम डेरे में सन्नाटा फैल गया। खबर आ गई थी कि फौजदारसिंह आ रहा है!

फौजदार! ··· बागी फौजदार!··· हत्यारा और खूंख्वार फौजदार!···

चहरे तमाचे खाए हुए, बुझी हुई आंखें···बढ़ी हुई सांसें, मरघट जैसा मौन! फौजदार आ रहा है, बस, आ ही गया है। कैसा सन्नाटा! बिलकुल उस बस्ती की तरह जो अभी-अभी आग में जल चुकी हो··

...और आ गया था फौजदार। लम्बा-चौड़ा शरीर। लम्बी बांहें। गोल चेहरे पर तिलक लगा हुआ। उसके चेहरे से क्रूरता नहीं टपकती थी। लगता था बड़ा मासूम है। वह पुलिस वालों जैसे कपड़े पहने हुए था और उसकी छाती पर कारतूस की पट्टी पड़ी हुई थी। हाथ में रायफल। साथ में गिरोह के तीन-चार आदमी थे।

"लालसिंह ठाकुर कहां हैं?" उसने पंडाल में पांव रखते ही किसी-से पूछा था।

कोई जवाव दे, इससे पूर्व ही लालसिंह उसके सामने आ खड़ा हुआ। काफी कोशिश करने के बाद उसके चेहरे पर मुसकान उभरी थी, फौजदार के स्वागत की मुसकान, "कैसे हो, भइया?"

फौजदार मुसकराया। उसने नीचे झुककर लालसिंह के पांव छू

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लिए, "ठीक हूं, जीजा ! ··· तुम सुनाओ । चन्दा कैसी है ? ·· गोपाल ? ···" वह अपनी बहिन-भानजे के कुशल-समाचार पूछ रहा था।

मगर न जाने क्या हो गया है लालसिंह को। लगता है कुछ सुन नहीं पा रहा है और अगर सुन रहा है तो समझ नहीं सकता है और यदि समझ रहा है तो बोलने की शक्ति खो बैठा है । फौजदार की हर बात के जवाब में वह बार-बार काफी मेहनत से चेहरे पर मुकसानें पैदा करता रहा था।

कुछ ठंडी अंगुलियां ! ··· कांप गया था लालसिंह। फौजदार ने जब उसके पैर छुए तो उसे कैसा विचित्र लगा था जैसे बिजली के नंगे तारों से छू गया है लालसिंह का बदन···

पंडाल में उसी तरह चुप्पी थी। थोड़ी देर में समाचार पाते ही वरपक्ष और कन्यापक्ष के लोग आ गए थे। वे सब बड़े खुशामदी और डरे हुए लहजे में फौजदारसिंह को जुहार कर रहे हैं। कितना आंतक और दबदबा ! ··· लगता है, सारी बस्ती में आदमी हैं, पर खरगोश का दिल लगाए बैठे हुए हैं। एकमात्र फौजदारसिंह है जिसके पास मर्द का दिल है · इसलिए कि वह 'बागी' है। उसकी रायफल पर कानून की रोक नहीं रही है !

फौजदारसिंह इधर-उधर की दो-चार बातें करने के बाद लालसिंह को एक किनारे ले गया था, "जरा बात तो सुनो! " और लालसिंह आदेश के साथ इस तरह खिचा चला गया था जैसे पंतग में दुम लगा दी गई हो। पंतग की गुलाम दुम !

एकांत में ले जाकर कोई विशेष बात नहीं कही थी फौजदारसिंह ने। वही घर-गृहस्थी की बातें की थीं। कहने लगा था. "पुलिस के कई नये प्लाटून 'गोरमिंट' ने बीहड़ों में भेज दिए हैं। पर इतनी आसानी से नहीं मरेगा फौजदार !" फिर बोला था, "मुझे घर की बहुत चिन्ता रहती है। दो साल से जा ही नहीं पाया हूं उधर ! सुनते हैं, भगवती भाभी बड़ी तकलीफ में है। पुलिस उन लोगों को परेशान करती रहती है। हो सके तो तुम उनकी थोड़ी-बहुत खोज-खबर रखा करो। अपनों के नाम पर तुम्हारे सिवा है कौन हमारा ? ···" कहते-कहते वह उदास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हो गया था।

पर उसकी उदासी की ओर लालसिंह का ध्यान नहीं था। वह पंडाल की ओर देख रहा था। हर आदमी की चोर नज़र उन्हींकी ओर लगी हुई है। ज्यादातर लोग समझ रहे होंगे कि फौजदारसिंह उसे 'कुछ' दे रहा है। कुछ यानी रुपये !··· लालसिंह डरा। इनमें से कई लोग गांवों में पहुंचकर प्रचार कर देंगे कि फौजदार ने लालसिंह को एकांत में ले जाकर 'कुछ' दिया था !

लालसिंह ने 'हां-हूं' करके जल्दी से विदा ले ली थी। फौजदारसिंह तुरन्त लौट गया था और घबराता हुआ लालसिंह उस दिन ठीक से सो भी नहीं सका था।··· यह बात छुप तो सकती नहीं कि फौजदार से लालसिंह की भेंट हुई है··· वह लालसिंह को एकांत में ले गया था·· दोनों फुसफुसाते हुए बातें करते रहे थे···

और लालसिंह की आशंका बिलकुल सही निकली। गांव वापस पहुंचते ही उसे पुलिस का सामना करना पड़ा। थाने पर उसे बुलाया गया था।

"साले से मुलाकात हुई थी, क्यों ?" बड़े दरोगा ने लालसिंह के पहुंचते ही सवाल किया था।

लालसिंह हकबका गया, "जी ? ···जी हुज़ूर !" बहुत प्रयत्न करने पर भी वह अपनी घबराहट छुपा नहीं सका था। जब-जब पुलिस से सामना होता है, वह इसी तरह हड़बड़ा जाता है। वह सफाई देने लगा था, "मैं तो बरात में गया था, सरकार ! वहीं फौजदार पहुंच गया और·"

"कितना नामा लिया ?" दूसरा सवाल।

"नहीं-नहीं, हुज़ूर ! मेरा उससे कोई ताल्लुक नहीं है। मैं तो उससे दूर ही रहना चाहता हूं, पर क्या करूं, वह मिल जाए तो उससे कुछ कहा भी तो नहीं जा सकता।"

"अबे, वह सब तो ठीक है। हम सब जानते हैं, मगर हमें सिर्फ इतना बताओ कि कितना नामा लिया उससे ?" दरोगा आंखें निकालते हुए उसपर बरस पड़ा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

"पर सरकार, मेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं है। वह तो···"

"चुप ! ···" दरोगा चिल्लाया, "मैं पूछता हूं, कितना रुपया लिया ?"

लालसिंह डरकर बार-बार हाथ जोड़ने लगा, "सच कह रहा हूं, मैंने कुछ नहीं लिया। मेरा उससे···"

दरोगा ने झपटकर कई तमाचे रसीद कर दिए। गालियां बकीं और गरजा, "कमीने !··· उसे 'एमुनेशन' सप्लाई करता है और हमसे झूठ···"

"नहीं, हुज़ूर !" लालसिंह उसके पैरों पर लोट गया। दरोगा ने दो ठोकरें मारीं और चिल्लाकर सिपाहियों से कहा, "बन्द कर दो इसे ! जब जूते पड़ेंगे तो सब उगल देगा ! बदमाश !···"

और लालसिंह चीखता-गिड़गिड़ाता रहा था। बार-बार अपने निर-पराध होने की दुहाई देने के बावजूद उसे सींखचों में बन्द कर दिया गया था। रातभर उसे तरह-तरह से मारा-पीटा जाता रहा था और अन्त में एक सौदा दरोगा ने उसके सामने पेश कर दिया था। उस समय कितनी मीठी आवाज़ थी उसकी ? इस तरह जैसे लालसिंह का एकमात्र शुभ-चिन्तक सिर्फ वही बचा है। शरीर पर जगह-जगह पड़ी चोटों की पीड़ा से कराहता हुआ लालसिंह एक ओर बैठा था और दरोगा उसे समझा रहा था, "मैं तेरी भलाई के लिए कहता हूं कि फौजदारसिंह को मरवा दे !·· वह जब तक ज़िन्दा रहेगा तब तक न तो तुझे शांति मिलेगी और न उसके घरवालों को !···अब जैसे यही मामला देख ले, तूने उससे एक कौड़ी नहीं ली, पर सब जगह खबर यही है कि तुझे रुपया मिला है। हमारा काम जांच-पड़ताल करना है। पूछताछ ज़रूरी है। पूछताछ में मारपीट भी हो जाती है···यह सब क्यों ? इसीलिए न कि फौजदार डाकू है ! सरकार को तुममें से किसीसे कोई मतलब नहीं है। उसे तो सिर्फ मुलज़िम चाहिए ! फौजदार ! ···वह जब तक है, तब तक तुम्हारी जान की मुश्किल बना रहेगा !"

भयातुर लालसिंह एक पिटे हुए बच्चे की तरह हांफता-सिसकता सब कुछ स्वीकार करता गया था।

"तो फिर बोल, फौजदार जब आएगा तो तू हमें खबर कर देगा न ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

"जी ?" वह चौंका था।

"हां, तुझे सिर्फ इतना करना है कि थाने तक खबर भेज दे, फिर हम सब कर लेंगे !"

"जी, हुज़ूर।" लालसिंह ने कांपती आवाज़ में कहा।

"बस, ठीक है।" दरोगा बोला, "फिर न तो तुझे किसी तरह की परेशानी होगी, न हमें।" वह उठ खड़ा हुआ, फिर सिपाहियों को आदेश दिए, "लालसिंह को घर जाने दो।"

और लालसिंह घर चला आया था। उस सारे दिन और रात और उसके बाद भी कई दिनों तक शरीर के हर जोड़ में दर्द उभरता रहा था। दर्द की हर टीस के साथ लालसिंह फौजदार को कोसता रहा था। मन ही मन वह ईश्वर से प्रार्थना करता रहा था कि फौजदारसिंह मारा जाए ! किसी भी तरह···दरोगा के शब्द उसके दिमाग में घूमते रहे थे—'जब तक फौजदार ज़िन्दा है, उसका कोई नाते-रिश्तेदार चैन की नींद नहीं सो सकता !···'

फौजदारसिंह ज़िन्दा है ! वह ज़िन्दा है इसलिए लालसिंह चैन की नींद नहीं सो सकता।···

लालसिंह सारे रास्ते बेचैन रहा। हर क्षण उसका दिल धड़धड़ाता, तेज़ गति से चलता रहा और वह ईश्वर से प्रार्थना करता रहा कि फौजदारसिंह मर जाए !

पटवारी की खबर भर ने उसे अधमरा कर दिया है, तिसपर जब पुलिस का बुलावा आएगा तो···लालसिंह के बदन में कई जगहों से दर्द की लपटें उठने लगी हैं···बेंत, घूंसे, लातें, जूते···गालियां···

हे भगवान्, फौजदार मर जाए !

लालसिंह को चन्दा पर भी क्रोध आता है। न जाने किन ग्रहों में उसकी जन्मपत्री का मिलान हुआ था चन्दा के साथ। न चन्दा से वह विवाह करता, न फौजदारसिंह उसके गले पड़ता ! कई-कई बार वह चन्दा से ही कह देना चाहता है कि फौजदारसिंह को रोक दे। उससे कह दे कि वह कभी लालसिंह के घर न आए, मगर हर बार यह कहते-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कहते रुक गया है लालसिंह ।

चन्दा फौजदार की बहिन है । सगी बहिन । दोनों की नसों में एक-सा लहू बह रहा है । लालसिंह को आशंका होती है कि चन्दा ऐसा नहीं कर सकेगी । यह भी हो सकता है कि वह लालसिंह पर ही बदल पड़े और अगर चन्दा ने फौजदारसिंह को यह बता दिया तो···?

ओह ! लालसिंह की घबराहट कई गुना बढ़ गई । फौजदार बहुत क्रूर है ! निर्दयी ! वह लालसिंह पर रायफल उठाने में भी परहेज़ न करेगा ! कितनी विचित्र स्थिति है लालसिंह की ! न उगला जाता है, न निगला जाता है ।

न जाने किस जन्म के पाप की आग में जल रहा है लालसिंह ! कितनी ही बार सोचा है कि इस ज़िन्दगी से कहीं दूर भाग जाए ! कहीं भी । हरिद्वार या मथुरा जाकर जोगी हो जाए !···पर लालसिंह में वह साहस भी तो नहीं है ।···

फिर ?

फिर कुछ नहीं ! लालसिंह यों ही जलता रहेगा, क्योंकि फौजदार-सिंह जिन्दा है ।

घर में घुसते समय भी इसी ऊहापोह में फंसा हुआ था लालसिंह । चन्दा ने उसके भीतर आते ही दरवाज़ा बन्द कर दिया ।

"क्यों ?" लालसिंह ने पूछा । इन दिनों वह बहुत शक्की स्वभाव का हो गया है । भय उसकी हर धड़कन में समा गया है । वह अपने आप-से भी डरता है ।

'श्शि,···शि,···" चन्दा ने उसे चुप रहने का संकेत किया ।

कांप उठा लालसिंह । इसका मतलब है, फौजदार···?

चन्दा कह रही थी, "फौजदार भइया है ।···गोली लगी है उसे ।"

एक क्षण ख़ामोश खड़े रहकर अटकते स्वर में लालसिंह ने पूछा, "कहां ?···"

"भीतर । उधर, रसोई में ।"

लालसिंह ने सिर से साफा उतार दिया । बोला, "एक लोटा पानी ला ! गला सूख रहा है ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

खेतों की मिट्टी फट गई है। दूर-दूर तक उजाड़ पड़ा हुआ है। इस धरती पर पशु भी नहीं झांकते। बीच-बीच में खड़े दो-चार पेड़ कितने डरावने लगते हैं। शाम के धुंधलके में महसूस होता है जैसे प्रेत खड़े हों। बांहें फैलाए हुए! मौत को बुलाते हुए!

इन खेतों में सचमुच प्रेतों की आत्मा बसती है। लालाराम के खेत हैं। अब से पांच साल पहले तक इनकी छाती पर फसलें हरे दुपट्टों की तरह झूमती रहती थीं। कई बीघा ज़मीन, भुरभुरी उपजाऊ मिट्टी, नये गीत की तरह जानदार···पर अब बांझ! बांझ इसलिए कि यह लालाराम की ज़मीन है! यह फौजदारसिंह के दुश्मन की धरती है··· और फौजदार दुश्मनी अंतिम सीमा तक निबाह रहा है। उसने लालाराम को जड़-वंश से निर्मूल कर डालने के लिए कई कत्ल किए हैं और इस धरती की फसलों के पहरेदारों को गोलियों से भून दिया है··

सिर्फ पांच साल!···बहुत थोड़े अरसे में ही यह सुहागिन धरती विधवा हो गई है। दूर-दूर तक कहीं कोई सुहागचिह्न नहीं! प्यासी धरती में दरारें पड़ी हैं जैसे आसमान की ओर मुंह फैलाए वह ज़िन्दगी की भीख मांग रही हो। तेज़ हवा के झोंके इक्का-दुक्का पेड़ों से टकराते हुए आसपास से निर्विरोध बहते रहते हैं। सांय!···सांय!···आवाज़ें करते हुए! डरावनी और बीभत्स!

लोग कहते हैं, यह धरती इसी तरह बांझ पड़ी रहेगी। प्रेतात्माएं इसपर मंडराती रहेंगी और धरती प्यास से छटपटाकर मर जाएगी! क्यों कि फौजदारसिंह ने अपनी दुश्मनी की आग में इसे झुलसा दिया है! ठीक उसी तरह जिस तरह लालाराम को झुलसा डाला है।

लालाराम ज़िन्दा है, पर वह खुद नहीं समझ पाता कि किस तरह ज़िन्दा है! क्या-कुछ देखने के लिए जिन्दा है! न जाने कितनी बार उसने ईश्वर से प्रार्थना की है कि वह मर जाना चाहता है! पर हर बार यह प्रार्थना व्यर्थ गई है। इसके विपरीत लालाराम को मर्मान्तक कष्ट झेलना पड़ा है। लालाराम ने एक के बाद एक लगातार मृत्यु-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

समाचार सुने हैं···

पांच साल। और इन पांचों सालों में पचासों समाचार! हर समाचार लालाराम को मृत्यु से अधिक वेदना देता हुआ। फौजदारसिंह ने बदले की आग में अन्धे होकर कितना कुछ नहीं कर डाला है उसके साथ! उसने दूर-दूर गांवों में रहने वाले लालाराम के नाते-रिश्तेदारों को गोलियों से उड़ा दिया है। कुछ लोग अपने गांव छोड़कर शहरों की ओर भाग गए हैं। स्वयं लालाराम पुलिस की पहरेदारी में धड़कनें ले रहा है।···

पर क्या सचमुच धड़कता है लालाराम का दिल ···शरीर में तो कुछ रह नहीं गया है। दुश्चिन्ताओं और भय ने उसे खोखला कर डाला है। हर पल लगता है कि फौजदार रायफल लिए सामने खड़ा है। हर क्षण महसूस होता है कि फौजदार की गोली उसकी कनपटी, माथा या सीना भेद गई है! स्त्रियां रो रही हैं···बच्चे चीख रहे हैं और लालाराम की क्षत-विक्षत लाश पुलिस से घिरी पड़ी है!

उसके खेत अनजुते पड़े रहेंगे। कौन जोत सकता है? फौजदार की गोली झेलने का साहस किसमें है? प्यासी धरती लालाराम की ही तरह ज़िन्दा रहेगी। ज़िन्दा, पर मृत!

कौन-सी बुरी घड़ी थी वह, जब लालाराम बिहारीसिंह से शत्रुता मोल ले बैठा! काश! यह ऐसी भूल होती, जिसे बाद में सुधारा जा सकता, पर अब?

शायद अब भी सुधारा जा सकता है! किस तरह? यों ही पुलिस के पहरेदार आसपास बिठाले हुए?···नहीं, फौजदार से क्षमा मांगकर! उसके पांव पकड़कर। मगर कैसे मिलेगा फौजदारसिंह? अगर मिल भी गया तो क्या वह लालाराम को क्षमा मांगने का मौका देगा?···

शायद नहीं! लालाराम के कुछ कह पाने से पहले ही उसकी रायफल गोली उगलेगी और चिन्दियां उड़ जाएंगी लालाराम की!

समझ नहीं पा रहा है लालाराम कि किस तरह इस मर्मान्तक कष्ट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

से बचा जा सकता है। इधर कुछ दिनों से वह एक निश्चित परिणाम पर तो पहुंच चुका है कि फौजदारसिंह से क्षमा-याचना के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है। पर यह क्षमा-याचना भी किस तरह संभव है ?

बहुत दिनों तक सोच-विचार के बाद लालाराम ने हल ढूंढ लिया था। इसी योजना के तहत गोमती फौजदारसिंह के घर पहुंची थी।

भगवती और चम्पा आश्चर्यचकित रह गईं। गोमती, उनके घर ?···उनके दुश्मन लालाराम की पत्नी उनके घर···एक क्षण आवाक् वे देखती ही रही थीं। जब गोमती ने बताया कि वह एक ज़रूरी काम के सिलसिले में आई है, तब कहीं वे सामान्य हुईं। चम्पा ने चटाई बिछा दी, कहा, "बैठो, बाई।"

वह बैठ गई। कुछ देर दोनों ओर ही चुप्पी रही। गोमती सोच रही थी कि कहां से शुरू करे और चम्पा तथा भगवती 'वह ज़रूरी बात' सुनने की प्रतीक्षा में थीं, जिसे कहने के लिए गोमती आई है।

"महाराजसिंह कहां है ?" गोमती ने पूछा, बिलकुल असम्बद्ध प्रश्न।

"खेत पर।" भगवती ने संक्षिप्त-सा जवाब दिया।

"और रूपा नहीं दीख रही ?" रूपा, फौजदारसिंह की बहिन। गोमती ने बड़े अपनेपन के साथ सवाल किया।

"वह भीतर है।" भगवती ने फिर से संक्षिप्त उत्तर देकर बात खत्म कर दी। कुछ उदासीन भाव से गेहूं बीनने लगी, जो आंगन में फैले हुए थे और जिनके एक किनारे पर चम्पा थी और दूसरे पर भगवती।

'अब किस तरह बात शुरू हो ?' गोमती ने सोचा। एक बार संकोच और कुछ भयातुर दृष्टि से चम्पा और भगवती के चेहरे देखे, फिर तीसरी ओर से गेहूं बीनने लगी।

गोमती का कुल व्यवहार उन्हें बहुत विचित्र और अस्वाभाविक लग रहा था, पर क्या कहें ?

वे तीनों ही चुप थीं। अपने-अपने अन्तर्द्वन्द्व में फंसी हुई। थोड़ी देर बाद भगवती ने पूछा, "तुमने बताया नहीं, गोमती, क्या बात है ?"

"खास बात नहीं है, बहिन !" गोमती ने सोचा, व्यर्थ की औपचा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रिकता छोड़ देना ही ठीक रहेगा। बोली, "एक प्रार्थना लेकर आई हूं। तुम बाल-बच्चेवाली हो। औरत की पीर समझ सकती हो ··इसलिए···"

गोमती कहते-कहते रुक गई तो भगवती ने कहा, "कहो क्या बात है ?··· कोई गलती हुई हमसे ?" उसके स्वर में व्यंग्य था।

गोमती पी गई। न जाने कितने ज़हरभरे घूंट पीती रही है, एक और सही। उसने कहा, "तुम बड़ी हो, ठकुराइन ! जो चाहो, कह सकती हो। मैं सब सिर-माथे ले लूंगी। बस, हाथ जोड़कर यह प्रार्थना करने आई हूं कि अपने फौजदार को रोक लो !··· मेरा घर-द्वार, नाते-रिश्तेदार सब बरबाद हो गए। एक सुहाग बचा है, उसीकी खातिर तुम्हारे दरवाज़े भीख मांगने आई हूं।···" बोलते-बोलते उसकी आवाज़ भारी हो गई। वह अपने आपको संभालने की बहुत कोशिश कर रही है, पर लगता है कि रो पड़ेगी···

भगवती और चम्पा ने उसकी आवाज़ की नमी महसूस की, उन्होंने देखा कि गोमती रोने को हो आई है··· वह कह रह थी, "मुझे भरोसा है, भगवती ! तुम मेरी प्रार्थना···"

भगवती ने पूरे शब्द भी नहीं कहने दिए। बोली, "मैं कोई देवी-देवता हूं, जो तुम्हारी प्रार्थना सुनूं ? मन्दिर में जाओ और वहां प्रार्थना करो !···"

चम्पा हैरान रह गई। भगवती औरत है या पत्थर ! इतना सीधा, कठोर और रूखा जवाब ? वह सोच भी नहीं पाती है कि भगवती जैसी कोई औरत हो सकती है। बिहारीसिंह की मौत के बाद से प्रतिशोध के चरम बिन्दु पर खड़ी है वह। जानती है कि फौजदारसिंह ने लालाराम का धन, धरती, बेटे सभी कुछ खत्म कर दिए हैं और खुद अपनी मौत की घोषणा कर रखी है, फिर भी भगवती प्यासी है···प्रतिशोध की न जाने कैसी शैतानी प्यास है यह !

गोमती के आंसू पलकों से नीचे उतर आए हैं। सूखी-परेशान निगाहों से भगवती की ओर देख रही है। शायद कुछ बोलना चाहती है, पर शब्द खो गए हैं !···

चम्पा का दिल भर आया। मगर भगवती ? उसके सामने क्या कहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जा सकता है। इस घर में वही होता है, जो भगवती चाहती है। चम्पा चुप रही।

"बहिन, मैं बड़ी उम्मीद लेकर आई हूं। तुम्हारी बात फौजदार नहीं टालेगा। जो हुआ, सो भूल जाओ···मैं तुम्हारे पांव पड़ती हूं! ···" गोमती ने भगवती के पैरों में सिर झुका दिया और रो पड़ी।

"अरे-रे··· यह क्या करती हो!" भगवती ने सकपकाकर पांव पीछे हटा लिए। बोली, "मर्द आदमी की ज़िन्दगी के लिए इस तरह भीख नहीं मांगी जाती। लालाराम भी मर्द-मुंछारिए हैं। उनके लिए यह सब करना ठीक नहीं है।"

यह इनकार था! अपरोक्ष रूप से भगवती उसका मज़ाक उड़ा रही थी। चम्पा जानती है कि इस तरह के क्रूर सुख उठाने में भगवती कितना आनन्दित अनुभव करती है स्वयं को। चम्पा को भगवती पर क्रोध आया। लगा कि वह स्वयं रो पड़ेगी। जिस आदमी के नाम पर यह सब हो रहा है, क्या वह भी भगवती ने चम्पा से नहीं छीन लिया है?··· उसकी आंखों में फौजदारसिंह का चेहरा उभरने लगा है···

गोमती रो रही है। उसने आंचल मुंह में दे लिया है और हिचकियां भरने लगी है।

भगवती के चेहरे की नसों में तनाव है। आंखों में चमक है, जैसे बिहारीसिंह ज़िन्दा हो उठा हो! कितना आनन्द!

"तो ·· मैं जाऊं, भगवती?···" वह हिचकियों से टूटे शब्दों के बीच पूछ रही थी।

"मैं क्या कहूं?" भगवती बोली, "यह तुम्हारा घर है, मगर यहां दान-धरम करना बन्द हो गया है। ·"

गोमती उठी, एक बार उसने भगवती और चम्पा की ओर घृणापूर्वक देखा और तेज़ी से लौट गई। उसकी हिचकियां तेज़ हो गई थीं और घर से बाहर निकलते-निकलते तक चम्पा और भगवती ने उनकी आवाज़ें सुनी थीं।

कुछ क्षणों के लिए फिर चुप्पी। न तो चम्पा के पास ही कहने के लिए कुछ है, और न भगवती के पास ही। दोनों चुपचाप गेहूं बीने जा रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चम्पा की अंगुलियां कभी-कभी कांप उठती हैं।

"कमीनी !..." कुछ देर बाद भगवती बुदबुदाई।

चम्पा ने कुछ नहीं कहा। नई बात नहीं है। भगवती एक शिला की तरह है, चिकनी शिला। जिसपर न तो पानी ठहर सकता है, न पानी का कोई सोता निकल सकता है! सबसे टूटी हुई, एक ओर पड़ी शिला! चम्पा अवाक् उसकी ओर देखती रही। कभी कुछ कहेगी तो भगवती झगड़ा करने पर उतारू हो जाएगी।

"इन गेहुओं में बहुत माटी है इस बार!" थोड़ी देर बाद भगवती बोली।

"हूं।" चम्पा ने कहा।

"तूने देखा, गोमती कैसे माफी मांग रही थी?"

"हां।" चम्पा ने विषय टालने की चेष्टा की। वह नहीं चाहती है कि फिर से किसीकी पीड़ा को आनन्द का कारण बनाया जाए। पर भगवती ऐसी घटनाओं की स्मृति तक में मज़ा लेती है। फौजदारसिंह ने जब-जब लालाराम के किसी परिवार वाले या किसी नाते-रिश्तेदार की हत्या की है, तब-तब भगवती ने ऐसा ही आनन्द लूटा है। चम्पा के मन में घृणा उभरती है।

"उस दिन नहीं आई थी यह हरामजादी, जिस दिन महाराजसिंह के बाप की मौत हुई थी।" भगवती क्रोध से भरी हुई कहे जाती है।

चम्पा चुप। देर तक भगवती इसी तरह की औंधी-सीधी बातें करती रही थी और चम्पा सदा की तरह घुटती हुई सब सह रही थी। एकाएक पौर के किवाड़ खड़के और महाराजसिंह भीतर आ गया...

'इस वक्त?'..चम्पा ने आश्चर्य से सोचा। 'खेतों से इस वक्त तो कभी नहीं लौटता है यह... आज...'

महाराजसिंह उनके सामने आ खड़ा हुआ। बोला, "तूने सुना? काका को गोली लगी है!"

गोली!... फौजदारसिंह को गोली! दोनों ने चेहरे ऊपर उठाए। चम्पा पूछ लेना चाहती है कि कहां लगी है?... कैसे हैं?... कैसे लगी?... कब?..पर कुछ नहीं पूछ सकती। कैसे पूछेगी? अभी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चम्पा कुछ कहेगी और भगवती उसे दस खरी-खोटी सुना डालेगी, 'अच्छा ! बड़ी चिन्ता है, घरवाले की ! हम सब मर गए हैं क्या ? एक तू ही बची है, उसकी चिन्ता करने वाली ! ...'

भगवती ने कुछ कठोरता के साथ सवाल किया, "कैसे लगी ?"

"बिडवा के बीहड़ में !" महाराजसिंह ने कुछ उत्तेजनापूर्वक कहा, "काका गोली खाकर भाग गया ! पर इतना जरूर है कि गोली लग गई है। सब कह रहे हैं कि अगर गोली निकल न पाई तो · "

"तो ?" चम्पा खुद को नहीं रोक पाती। भगवती ने आश्चर्य के साथ उसे घूरा जैसे पूछा हो, 'तू कौन है पूछने वाली ? ·· ' और चम्पा सहम गई।

महाराजसिंह कह रहा था, "सुनते हैं कि पांव में लगी है। बहादुरा के गिरोह के तीन लोग उस मुकाबले में मारे गए। काका और दस-बारह आदमी निकल गए !"

"हूं।" भगवती फिर से गेहूं बीनने लगी। थोड़ी देर के लिए खामोशी फैल गई फिर महाराजसिंह ने कहा, "तू कहे तो मैं पता लगाऊं···? जाने कैसी तबीयत हो ? ···"

भगवती ने स्वीकृति दी और चम्पा की इच्छा हुई, कहे कि महाराजसिंह को मत भेजो ! पुलिस का चक्कर ·· जो कुछ होगा, भुगत लेंगे ! चम्पा जानती है कि इसी तरह डाकू बनते हैं। अपनेपन का मोह छोड़ नहीं पाते और मिलना-जुलना चलता रहता है। पुलिस तंग करती है और फिर अच्छा-भला आदमी बीहड़ों की राह पकड़ लेता है। महाराजसिंह फौजदार से मिलने जाएगा फिर पुलिस उसे तंग करेगी और ·· यों भी भगवती ने उसमें कम 'बागपन' नहीं भर रखा है। बचपन से ही बीहड़, बन्दूक, बदला, विहारीसिंह और न जाने क्या-क्या सिखाती रही है उसे।··· मर्द के नाम पर घर में एक यही तो बचा है··· उसे भी भगवती बीहड़ों में भेजे दे रही है।

महाराजसिंह एक ओर बैठा कुल्हाड़ी का बेंट छीलने लगा था। चम्पा देर तक बार-बार उसे देखती रही—एक यही तो बचा है···

× × ×

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चम्पा ने दीवट पर रखा दिया बुझा दिया और चारपाई पर आ पड़ी। सोने की इच्छा नहीं थी, पर रोशनी में बेचैनी बढ़ जाती है।

फौजदारसिंह को गोली लग गई है ?…

चम्पा ने एक करवट बदली। अंधेरे के बावजूद लगता है कि आंखें चकचौंध हो रही हैं। नींद नहीं आती। कैसे आएगी ? चकाचौंध के बीच कुछ दृश्य बनने-बिगड़ने लगते हैं ··

···गोली लग गई है···फौजदारसिंह निकल भागा··· महाराजसिंह कहता है कि अगर गोली ठीक वक्त पर न निकाली गई तो··

चम्पा ने करवट बदली और चौंक गई। शायद कपड़ों की रगड़ खाकर उसके माथे की बिन्दी उपट गई है और अंधेरे में मालूम नहीं कहां गुम हो गई है ! ··· उसने माथे पर हथेली फिराई ! सूना माथा··· बिलकुल भगवती जैसा !

भगवती का सूना माथा··· चम्पा की बिन्दी··· फौजदार को गोली लग गई है ! ·· अगर ठीक वक्त पर न निकाली गई तो···

चम्पा झपटकर उठी। आले में टटोलकर दियासलाई ढूंढी और दीया जला दिया। बिन्दी ढूंढेगी।

उसने चारपाई के कपड़े लौट-पलट डाले। बिन्दी दीख ही नहीं रही है ··उसने फिर से कपड़े उलट-पलट दिए।··· बिन्दी ?

दिये की मद्धिम रोशनी में ठीक से कुछ दीखता भी नहीं। बार-बार चम्पा की परछाईं ही उसके आड़े आ जाती है। मुमकिन है परछाईं में बिन्दी गुम हो जाती हो···

वह पलंग के दूसरी ओर आ गई। इधर से सब साफ-साफ दीखता है ·· कपड़े फिर उलट-पलट डालती है चम्पा··· बिलकुल भगवती जैसा सूना माथा ·· न जाने कहां चली गई ! इन कपड़ों के अम्बार में किधर है वह ?··· न जाने किधर छुपी पड़ी होगी ?

बीहड़ भी इन कपड़ों जैसे ही ऊबड़-खाबड़ हैं··· पता नहीं फौजदार-सिंह किधर पड़ा होगा··· अगर ठीक वक्त पर गोली न निकाली गई··· बिन्दी मिलनी ही चाहिए !

बिन्दी मिलनी ही चाहिए !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वह !···

चम्पा ने झपटकर उसे उठा लिया। गोली निकल गई है।··· अब सूना माथा नहीं। उसने बिन्दी माथे पर चिपका ली। लगता है, जैसे मीलों तक दौड़ ली है इस बीच। अभी-अभी कितने बुरे खयालों से घिर गई थी चम्पा ?··· अकसर घिरी रहती है। तब तक घिरी ही रहेगी जब तक···

चम्पा की आंखों में फिर रोशनी गड़ने लगी। पिछले कुछ बरसों से उसे अंधेरा अच्छा लगता है। लगता है कि रोशनी उसका जिस्म छीलती है ! वह हमेशा सोई रहना चाहती है।···वह उठी और दीया फिर बुझा आई।

बगलवाले घर से बच्चों का शोर आ रहा है। इस कमरे से बिलकुल सटा हुआ है वह घर। इसका मतलब है कि अभी बहुत रात नहीं हुई। शायद नौ बजे होंगे, हद हुई तो दस। दस बजे बच्चों का यह शोर हल्का हो जाता है···और अभी शोर है, यानी दस नहीं बजे।

फौजदार को गोली लग गई है !···बिडवा के बीहड़ में मुकाबला हुआ था !···

चम्पा ने अनचाहे ही माथे पर हाथ फिरा लिया। बिन्दी चिपकी हुई है। कब तक चिपकी रहेगी ?···

भगवती सो गई होगी। बगलवाले कमरे में सोती है। अकेली। उसे डर नहीं लगता ?···नहीं लगता। जिसपर मौत की खबर का असर नहीं होता, उसे क्या डर लगेगा ? अजीब है वह ! मगर आज भी वह सो गई है यह जानते हुए भी कि फौजदारसिंह को गोली···

अगर गोली न निकाली ··बिलकुल सूना माथा, भगवती जैसा !

चम्पा कैसे ज़िन्दा रहेगी ?·· और भगवती किस खयाल के सहारे जिन्दा है ? चम्पा भी उसी तरह ज़िन्दा रहेगी।·· और इस समय भी कैसे ज़िन्दा है चम्पा ? माथा भले सूना न हो, उसपर बिन्दी जड़ी हो···मगर कैसी है बिन्दी ? होते हुए भी गुम !···और चम्पा फिर भी जिन्दा है !

उसे हंसी आई। अजीब-सी हंसी। वह ज़िन्दा है। रोशनी नहीं है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और वह ज़िन्दा है। बिन्दी है, मगर नहीं है। फौजदार है, मगर नहीं है।

जब था, तब इस तरह दस बजते न बजते अंधेरा हो सकता था ?

ग्यारह बजे तक तो वह खाना खाने ही लौटता था। भगवती सो चुकी होती थी तब तक। रसोई में बैठी, आंच के बगल में चम्पा जागती रहती थी। गरम रोटी खाने की आदत थी फौजदार को। रोटी खाते वक्त वह दुनिया-जहान की ऐसी-ऐसी बातें करता रहता था, जिनके बारे में चम्पा ने कभी कुछ नहीं सुना था। सरकार की, नेता लोगों की, पाल्टी-बाज़ी की, गांव-घर की और फिर डाकुओं की।···

डाकुओं की बातें ! ये बातें तो भगवती भी बहुत करती है। जब फौजदार इस तरह की बातें करता था तो चम्पा उपेक्षा बरत जाती थी। वह जानती थी कि इस घर में एक आग सुलग रही है··सब जल रहे हैं ऐसा न हो कि चम्पा को भी जलना पड़ जाए !···

और चम्पा को भी जलना पड़ गया। यह जलना भी बड़ा अजीब है। आदमी को मालूम ही नहीं होता कि वह जल रहा है।

चम्पा को भी मालूम नहीं होता है कि कहां से जल रही है। बस इतना याद कर पाती है कि हर वह पिछली याद जिसका सम्बन्ध फौजदारसिंह से है, लपट बनकर उसके मन में उठती है और जल जाती है चम्पा।

आज फिर से कुछ यादें घिर आई हैं···

फौजदार को गोली लग गई है···

उस दिन बैलों के लिए चारा काटते में उसके अंगूठे पर गंडासा लग गया था और वह चम्पा के पास आया था,···चम्पा बहुत घबरा गई थी। बिलकुल रुआंसी हो गई थी···

अब गोली लग गई है···

न जाने कहां होगा ?

गंडासे के घाव पर पट्टी बांध दी थी चम्पा ने और रात को कई बार पूछा था, "दरद होता है ?···हलदी-चूना चढ़ा है ? चुभता होगा न ?···"

गोली के घाव पर क्या लगेगा ?···कौन लगाएगा ?

लपटें उठने लगी हैं। रोज़ उठती हैं। कहता था "तुझे शहर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दिखाने ले जाऊंगा। गवालियर!···खूब बड़ा शहर है। ऐसी-ऐसी औरतें जिन्हें देखकर तू दंग रह जाएगी!···सलीमा देखा है तूने?"···चम्पा की आंखें नम हो जाती हैं। अजीब आग है यह! पानी बरसाने वाली!

'सलीमा देखा है तूने?"

चम्पा ब्याहकर आई ही थी। सब बालापन बीहड़ों के गांव में बीत गया और यह कह रहा है—'सलीमा देखा है तू ने?' चम्पा जवाब देना चाहती है, पर दे नहीं पाती। कैसे दे?···लाज लगती है।

लाज लगने की ठहरी। कुल जमा महीनाभर बीता है इस नये घर में। अभी ठीक से चेहरे भी नहीं पहचान सकी है। हर चीज़ के साथ मायका याद आता है। यहां के घर, वहां के घर। यहां के आदमी, वहां के आदमी। ढोर, गली, रास्ते और बातें, सब पराये···

और यह?···कहता है, सलीमा देखा है तूने। चम्पा को इससे भी डर लगता है। जब ज़रा एकांत देखा, सामने आ खड़ा हुआ। यों ही, बस देखता रहेगा। चम्पा घूंघट खींच लेगी तो ही-हीकर हंस देगा। अजीब आदमी है! उस तरह तो चम्पा को उसके गांव में कोई देखता नहीं था। देखता तो मां क्या कहती?···

कभी-कभी चम्पा का मन होता है, उसे टोक दे – 'यों पीछे-पीछे क्यों लगे फिरते हो?···शर्म नहीं आती!···' पर कैसे कह सकती है। इसके साथ फेरे पड़े हैं चम्पा के। यह उसका आदमी है। आदमी यानी घरवाला!

घरवाला है, तो घरवाले की तरह रहे! इस तरह···

उस दिन रास्ते में आ खड़ा हुआ। भगवती और बिहारीसिंह आंगन में थे। चम्पा पिछवाड़े की तरफ कण्डे थाप रही थी। गोबर से सने हाथ, माथे से पल्लू खिसककर नीचे आ गया और ठीक तभी फौजदारसिंह··

बहुत घबरा गई थी चम्पा। कैसे देखने लगा था वह?···वह मुसकरा भी रहा था और उसकी आंखें थीं कि लगता था चम्पा की आंखों में उतरी जा रही हैं। चम्पा कोहनियों से आंचल संभालने की कोशिश करने लगी। बार-बार खिसक जाता था वह। नई साटन की चुनरी थी। नई बछिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

की खाल-सी मुलायम और फिसलनी।

फौजदार बोला, "ला, मैं उढ़ा दूं!" और इससे पहले कि चम्पा इनकार करे, उसने ओढ़नी उसके माथे चढ़ा दी।

कैसी सिहर गई थी चम्पा! जैसे ठंडी हवा का झोंका कनपटियों को छू गया हो! वह उस क्षण फौजदारसिंह पर क्रोधित हो जाना चाहती थी, पर नहीं हो पाई। उलटे उसे लगा कि ठीक हुआ···कैसी गुदगुदी से भर गया मन! ऐसा क्यों होता है? कई दिनों तक सोचती रही थी वह और फिर धीरे-धीरे उसे यह अच्छा लगने लगा था। फौजदार की मुसकानें, उसकी बातें, उसके वायदे और वह सारा···

"सलीमा देखा है तू ने?" कई-कई बार की तरह जब फौजदार ने एक बार फिर पूछा था तब चम्पा को यही सवाल अच्छा लगा था। बोली थी, "नहीं। किसके साथ देखती?"

"मेरे साथ देखना।" फौजदारसिंह छाती फुलाकर बोला, "मैं दिखाऊंगा तुझे सलीमा!···" और फिर देर तक सिनेमा के बारे में बताता रहा था फौजदार। कैसे होता है। रोशनी गिरती है और तसवीरें उभर आती हैं। फिर तसवीरें चलने लगती हैं, बोलने लगती हैं, गाने लगती हैं और रोने लगती हैं। बन्दूक भी चलती है सिनेमा में।

ऐसी हर जानकारी के साथ बीहड़ों की ऊंची-चिकनी चोटियों से गिरती हुई चम्पा अचरज की गहराइयों में चली गई थी।

एक बार बोला था, "नये फैशन के बुन्दे देखे हैं तूने? वह, जो कान से नीचे की तरफ लटकते हैं?"

"एरिंग!"

"नहीं, वे कुछ और होते हैं।" फौजदार उनका रूप ठीक से व्यक्त नहीं कर पा रहा था। उसने अंगुलियां नचाकर समझाने की कोशिश की थी, जब नहीं समझा सका तो उदास हो गया था। बोला, "खैर, कोई बात नहीं। खरीद लाऊंगा, तब देखना।"

और चम्पा बुन्दों के खयाल में खो गई थी। कितना अच्छा है··· कितना मीठा···कितना सीधा···उसका घरवाला!

कभी-कभी बिलकुल अजीब-सी बातें करने लगता था। कहता था,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

"देख, कुछ साल बाद मैं बूढ़ा हो जाऊंगा। तू भी बुढ़िया हो जाएगी, फिर अपन मन्दिर चला करेंगे। वह शिव-मन्दिर है ना, वहां। पटेल को देखा है तूने? पटेलनी के साथ मन्दिर जाता है। वैसे ही अपन···और खेतों की बात रही, सो तब तक अपने बाल-बच्चे इतने बड़े हो चुके होंगे कि···"

"हिश्श्!" चम्पा मीठा गुस्सा ज़ाहिर करती और वह हो-होकर हंस देता।

चम्पा गुस्सा हो जाती, "कैसे हंसते हो?···बाहर जेठजी··"

और वह चुप हो जाता था। बड़े-बूढ़ों की मर्यादा का कितना खयाल रखता था वह!···

और चम्पा भी कितना ख़याल रखती थी?···पर सिर्फ सालभर में ही सब कुछ बदल गया!···सब!···बिहारीसिंह पकड़ा गया, फिर सज़ा हुई और फिर उसकी मौत···और फिर सारे घर में एक आग लग गई! बुझी ही नहीं है। भगवती कहती है—"तब बुझेगी, जब फौजदार लालाराम को "

झूठ कहती है, भगवती! चम्पा का मन हुआ, चीख पड़े। यह आग तब तक नहीं बुझेगी जब तक फौजदार बीहड़ों में है। भगवती को पता नहीं, उससे दस गुनी आग झेल रही है चम्पा! उसने बेचैनी से चारपाई पर करवटें बदलीं। नींद नहीं आ रही है। कैसे आ सकती है? फौजदार सिंह को गोली···

बगल के घर से बच्चों का शोर उठना बन्द हो गया है। शायद दस बज चुके हैं। भगवती सो रही है। सुबह महाराजसिंह यह मालूम करने जाएगा, कि उसका काका कैसा है।···एक महाराजसिंह ही तो बचा है घर में···

अंधेरे के बावजूद चम्पा को लगता है कि हर तरफ फौजदारसिंह मौजूद है···दायें, बायें, सिरहाने···

'कौन?' वह चौंक गई। रोशनी हो गई थी। उसे मालूम ही न पड़ा कि कब किवाड़ खुले, रूपा भीतर आई और उसने दिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जला दिया ।

रूपा मुसकरा रही थी । शायद मुसकरा नहीं रही है, मुसकराने की कोशिश कर रही है । इस घर में कौन मुसकरा सकता है ! सब जल रहे हैं । सबकी अपनी-अपनी आग है । रूपा की भी अपनी आग है ··

"सो गई थीं भाभी ?" रूपा पूछ रही थी । वह इसी कमरे में सोती है । जब से फौजदार नहीं है, उसीकी चारपाई पर सोती है । कहती है, "भाभी, तुम्हारे साथ मन रम गया है ! ···"

एक बार कह दिया था चम्पा ने, "बहिना, मेरे साथ मन रमाओगी तो कितने दिन रमा पाओगी । एक न एक दिन तुम्हें पराये घर··बेटी की जात ठहरीं ! ·· " चम्पा आगे भी कुछ कहती, पर फौरन ही उसने अपने आपको रोक लिया था । ओह ! कितनी बड़ी गलती कर गई वह । रूपा से इस तरह कहना, उसकी जलन तेज़ करना है ।

उसने देखा था कि रूपा की आंखें नम हो आई हैं । होने की ठहरीं । अठारह साल की हो गई है । दसियों जगह रिश्ते की बात उठी है, पर कुछ नहीं हो सका । हो भी नहीं सकता है । हर आदमी किनारा कर जाता है । कहता है—"भाई, फौजदारसिंह की बहिन से रिश्ता पालकर कौन पुलिस की झंझट मोल लेगा ।···"

दिन टले हैं, फिर माह, फिर साल··और रूपा इसी घर की होकर रह गई है । भाभी में मन रमाए हुए । क्या सचमुच मन रम पा रहा है उसका ।

रूपा उसके करीब आ गई । उसकी मुसकराहट गायब हो चुकी थी । गंभीरता का एक आवरण स्थायी होकर रह गया है उसके चेहरे पर । वह चम्पा के सिरहाने बैठ गई ।

५

लालसिंह सोते में चौंक पड़ता है । लगता है, पुलिस छापा मार रही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है। घर खाकी वरदी वालों से घिरा हुआ है, सबके हाथ में रायफलें हैं। लाउडस्पीकर पर चेतावनी दी जा रही है—"लालसिंह, बाहर आ जाओ। चुपचाप। गड़बड़ की और··"

पुलिस गोलीबारी करने लगती है। सब मारे जाते हैं। लालसिंह, चन्दा और फौजदार जो इस समय उनके घर में पड़ा है। तबीयत होती है कि फौजदारसिंह को धक्के मारकर बाहर निकाल दे, गालियां देता हुआ थाने तक ले जाए। कहे कि हमें भी मरवाना चाहता है।

दरोगा ने कहा था—'बागी की मदद करना, उससे भी बड़ा जुर्म है।···" और लालसिंह यह जुर्म कर रहा है।

फौजदारसिंह भीतर पड़ा हुआ है। गोली पिंडली छील गई थी। घाव गहरा था, पर अब भर चला है। खतरा नहीं है।

पुलिस का छापा जरूर पड़ेगा। गोलीबारी होगी और फौजदार के साथ-साथ लालसिंह और चन्दा भी मारे जाएंगे।

तब ?

मौत की एक डरावनी सिहरन लालसिंह के शरीर में भर जाती है। समझ में नहीं आता कि इस बला से कैसे पीछा छुड़ाए। इस सारे फसाद की जड़ है चन्दा। इसीसे विवाह के कारण लालसिंह के गले फौजदार पड़ गया। मन होता है चन्दा को छोड़ दे, पर क्या ऐसा कर सकता है लालसिंह ?··नहीं। फौजदार बहुत खूंख्वार है। वह साधकर गोली मारेगा कि लालसिंह दूसरी करवट भी न ले सकेगा।

फिर ?

चन्दा को रोका भी नहीं जा सकता। कैसे रोका जा सकता है ? वह फौजदार की सगी बहिन है। उसके दिल में फौजदार के लिए पीर उठती है। उसे चन्दा पर खीझ आने लगती है। मगर चन्दा पर खीझने से क्या फायदा। असली ज़हर तो है फौजदार। किसी न किसी तरह इस ज़हर से मुक्ति पानी पड़ेगी।

कैसे ?

फौजदारसिंह को गोली मार दी जाए, सोते में। लालसिंह कांप उठता है। यह नहीं हो सकेगा। एक तो ठीक से निशाना नहीं लगा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पाता है वह और लगा भी दिया तो इसका गिरोह बदला लेने पर उतर आएगा। तब कहां जाएगा लालसिंह ?

फिर ?

पुलिस को खबर दे दी जाए। दरोगा कहता था—"तुम तो इशारा भर दे देना, बाकी सब हम कर लेंगे।…" पुलिस घेरा डालेगी और पलक मारते फौजदारसिंह खत्म हो जाएगा। उसके खत्म होते ही लालसिंह की सारी परेशानी खत्म।

और यदि पुलिस के हाथों वह बच निकला तो ?… लालसिंह सिहर उठता है। उस हालत में फौजदार उसे कभी ज़िन्दा नहीं छोड़ेगा। सारे नाते-रिश्तों को किनारे रखकर वह लालसिंह को गोली से उड़ा देगा।

सोचते-सोचते थक गया है लालसिंह। समझ में नहीं आता कि क्या किया जाए ?

इन तीन दिनों से, जब से फौजदार उसके घर में है, लालसिंह कुछ विक्षिप्त-सा हो उठा है। किसी की बात ठीक से सुनाई नहीं पड़ती। सुनाई पड़ जाए तो वह ठीक से उत्तर नहीं दे पाता। अजीब से उत्तर देता है। चन्दा परेशान हो जाती है। एक बार पूछ ही बैठी, "क्यों, तुम्हारी तबीयत खराब है क्या ?"

और लालसिंह ने इस सवाल का जवाब भी उसी तरह दिया, "ऐं ?… तबीयत ? · नहीं तो। ठीक है। ठीक ही है।"

फौजदारसिंह को भी शायद उसपर कुछ सन्देह हो गया है। किस तरह देखता है उसकी तरफ, जैसे लालसिंह की आंखों के रास्ते दिल कुरेदकर देख रहा हो कि वहां क्या है।

रात-रातभर ठीक से नींद नहीं आती। अजीब-अजीब सपने। कभी लगता है कि पुलिस घेरा डाल रही है। कभी दीखता है कि फौजदार लालसिंह को गोली मार रहा है। कभी लगता है कि लालसिंह मर गया है और चन्दा विलाप कर रही है ! यह जीना भी कोई जीना है !

फौजदार भी बहुत चौकन्ना सोता है। लालसिंह जानता है। उसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लगता है कि वह सोता ही नहीं है। उसे भी मौत का डर कम थोड़े लगता होगा ! आज रात की ही बात है। लालसिंह कैसे चौंककर जाग गया था ! कुछ देर चारपाई पर पड़ा करवटें बदलता रहा फिर पेशाब करने बाहर आया। जब रसोई के पास से निकला तो देखा कि फौजदार चारपाई पर बैठा हुआ है। लालसिंह के पैर डगमगा उठे थे। डगमगाने की बात ही है। कैसा डरावना लग रहा था वह ?··· चांदनी में चारपाई पर बैठा वह निरुद्देश्य ही आंगन की ओर तक रहा था और लालसिंह के निकलते ही उसकी नज़र कौंधकर उसपर आ टिकी थी। बगल में रायफल ·· चमचमाती हुई थ्री-नाट-थ्री !

अपने आपको बहुत संयतकर लालसिंह ने पूछा, "अरे, तुम अब तक जाग रहे हो ?"

"हां।" उसकी भारी आवाज़ लालसिंह के दिल पर लगी थी, बिलकुल गोली-सा असर करती हुई, "नींद नहीं आ रही। मांस चटकता है। तुम कहां जा रहे हो ?···"

"मैं ?" लालसिंह हड़बड़ा गया। टूटते स्वर में जवाब दिया, "बस, यहीं तक। पेशाब ·" और वह बात अधूरी छोड़कर आगे बढ़ गया।

निश्चय ही फौजदारसिंह को उसपर सन्देह हो गया है। कितनी तीखी नज़र थी उसकी ? लालसिंह के मन में बात बैठ गई है।

तब से नींद नहीं लगी है उसकी। चन्दा बीच में दो बार जागकर पूछ चुकी है, "अरे, तुम सोए नहीं ?" और हर बार लालसिंह 'बस, सोता ही हूं।' कहकर करवटें बदलता रहा है।

नींद पलकों पर है, मगर नीचे नहीं उतरती। शरीर थका हुआ है, पर एक जगह नहीं पड़ा रहना चाहता है। सब तरफ खामोशी है, मगर लालसिंह को लगता है कि उसके कानों में चीखें भरी हुई हैं।

हर क्षण कोई बुरा खयाल दिमाग से आ टकराता है—बिलकुल घन की तरह चोट करता है और लालसिंह की पलकों पर ठहरी नींद उतरते-उतरते रह जाती है।

सुबह के साथ ही भारी दिमाग से वह उठता है—थका हुआ, बेचैन और सारे शरीर में दर्द महसूस करता हुआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

फौजदार जाग रहा था। अब भी जाग रहा है ? लालसिंह चौंका। इसे सन्देह ··

जब रसोई के सामने से वह निकला तो फौजदार ने उसकी ओर देखा भी नहीं। वह लेटा रहा और छत की ओर नज़रें टिकाए रहा। अगर उसे लालसिंह पर सन्देह होता तो इस तरह लेटा रहता ? शायद उसे सन्देह नहीं है। लालसिंह व्यर्थ ही आशंकित हो उठा है। उसने अपने-आपको कहीं और बहका ले जाना चाहा, पर यह हो नहीं पा रहा है।

हो ही नहीं सकता। जब तक फौजदार ज़िन्दा है, तब तक लालसिंह शांति का कोई क्षण नहीं जी सकता ! उसने मन ही मन फौजदार को कई गालियां दीं।

पर एक न एक दिन यह मारा तो जाएगा ही। कुल्ला करते हुए वह सोच रहा था। पर कब ? कोई निश्चित समय तो है नहीं। बीहड़ों में लोग पांच-दस नहीं, पच्चीस-पच्चीस बरसों तक बागी रहते हैं और पच्चीस बरसों का मतलब होता है, एक आदमी की पूरी उम्र ! ··· क्या तब तक लालसिंह फौजदार की मौत की प्रतीक्षा में अशांति की यह ज़िन्दगी जीता रहेगा ?

इतना लम्बा इन्तज़ार ?···

लालसिंह कुल्ला करने के बाद फौजदार के पास आ बैठा। वह उसके पास नहीं जाना चाहता, पर रीति-नीति तो निबाहनी ही पड़ती है। घर में मेहमान हो और उसके साथ घण्टे-दो घण्टे न दिए जाएं, ऐसा कैसे चलेगा।

चन्दा दो लोटे चाय रख गई। उन दोनों ने फूंक-फूंककर चाय पीनी शुरू कर दी। अब तक कोई बात नहीं उठी थी। कैसे उठे ? दोनों अपनी-अपनी ऊहापोह में फंसे हैं। एक-दूसरे से बंधे हुए, पर एक-दूसरे से कटे हुए।

मगर बात तो शुरू करनी ही पड़ेगी। लालसिंह ने सोचा, फिर बात ढूंढ़ ली, "मुझे यहां के दरोगा ने तीन-चार बार परेशान किया। मार-पीट भी की।" बोलते-बोलते उसका चेहरा बुझ गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

"हूं।" फौजदार थोड़ी देर चुप रहा फिर पूछा, "यहां कौन है दरोगा ?"

"कोई गुप्ता है।" लालसिंह ने बताया।

"क्या कहता है ?"

"कहता है फौजदार को मरवा दो !" लालसिंह बातचीत के बहाव में कह तो गया, पर सिहर उठा। शायद फौजदार पसन्द नहीं करेगा इस बात को।

फौजदार हंसा, "सब यही कहते हैं।" वह थोड़ी देर चुप रहा। फिर बोला, "तो तुमने क्या कहा ?"

"मैं क्या कहता ?"

"तुमने कहा नहीं कि मरवा दूंगा !"

"ऐं ?..." लालसिंह चौंक गया।

फौजदार उसकी ओर टकटकी बांधे देखने लगा था। लालसिंह उस नज़र को बरदाश्त नहीं कर सका। नज़र फेर ली।

थोड़ी देर के लिए बातचीत फिर टूट गई। लालसिंह ने सोचा कि निश्चय ही फौजदार को असली बात मालूम है। वह समझ गया है कि लालसिंह पुलिस से वायदा कर आया होगा। उसने चाय के कई गरम-गरम घूंट हलक के नीचे उतार लिए।

"मैं कल चला जाऊंगा।" फौजदार बोला, "अब सब ठीक हो गया है। बहादुरा मेरा इन्तज़ार कर रहा होगा।"

लालसिंह कुछ नहीं बोला। सिर्फ उसने एक गहरी सांस ली और फौजदार की ओर देखा। इस तरह जैसे उसे यह सुनकर खुशी हुई है। पर जब उसने यह देखा कि फौजदार भी उसीकी ओर देख रहा है तब फिर से उसके चेहरे की चमक लोप हो गई।

चाय खत्म हो गई थी। चन्दा कुछ रोटियां ले आई थी। लालसिंह खेत पर चला जाएगा, फिर दोपहर के वक्त वापसी होगी। लालसिंह ने रोटियां थैले में डालीं और बिना कुछ कहे-सुने उठ पड़ा।

फौजदारसिंह यहां से चला जाना चाहता है। वह लालसिंह की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नज़र का फेर समझ रहा है। वह जान गया है कि लालसिंह को उसका इस तरह आना पसन्द नहीं आया। घाव में टीस अब भी उठती है। सोचा था कि लालसिंह के यहां से तब निकलेगा, जब घाव पूरी तरह ठीक हो जाएगा, पर अब लगता है कि यहां रहना ठीक नहीं है। यों भी रिश्तेदारी में ज़्यादा दिन की मेहमानी आदर घटा देती है। फिर यह है बहिन का घर। अहसान पर अहसान चढ़ते जा रहे हैं। फौजदार-सिंह कैसे चुका सकेगा? एक बार लालसिंह को पांच हज़ार देने चाहे थे, पर वह साफ मुंह चुरा गया। बोला, "नहीं, रहने दो; मुझे ज़रूरत नहीं है, जब होगी तब मांग लूंगा!"

फौजदार ने अधिक वज़न डाला तो लालसिंह ने बड़ी सफाई से इनकार दोहरा दिया, "नहीं-नहीं! कह तो रहा हूं, जब ज़रूरत होगी, ले लूंगा। तुम्हारे सिवा हमारा है ही कौन, जिससे मांगने जाऊंगा।"

और फौजदार को रुपये वापस ले लेने पड़े थे। उस दिन उसे बुरा लगा था, पर किसी की जेब में ज़बरदस्ती तो ठूंसे नहीं जा सकते!

फौजदार की तबीयत हुई, इस बार कुछ रुपये दे जाए। चन्दा को दे जाएगा। लालसिंह के नकार की ज़रूरत ही नहीं होगी। वह जानता है कि लालसिंह की उपस्थिति में चन्दा वही कहेगी जो लालसिंह कहेगा। क्यों न अभी ही दे दिए जाएं। यही सोचकर उसके चन्दा को पास बुला लिया है। इधर-उधर की दो-चार बातें करने के बाद बोला, "तुझे दो हज़ार दिए जा रहा हूं। कभी जरूरत पड़े तो···"

"नहीं-नहीं, रहने दो!" चन्दा ने भी लगभग उसी तरह उत्तर दिया, जिस तरह लालसिंह देता है, "जब ज़रूरत होगी, तुम्हें खबर कर दूंगी। अभी रहने दो।"

"अरे, रख ले!" फौजदार ने आदेशपूर्ण स्वर में कहा, किन्तु चम्पा ने नोटों की गड्डी लौटा दी, "नहीं-नहीं, उन्हें मालूम हुआ तो ···रहने दो···" वह जाने लगी।

फौजदार कुछ नहीं कह सका। लगा कि चन्दा और लालसिंह ने थोड़े-थोड़े दिनों के फर्क से थप्पड़ मार दिए हैं। चन्दा चली गई और फौजदारसिंह देर तक नोटों की गड्डी हाथ में लिए बैठा रहा। उसे पहली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बार लगा था कि ये नोट नहीं हैं, कागज़ के टुकड़े हैं···अब तक ऐसे परिचितों और नाते-रिश्ते वालों की भीड़ उसके गिर्द रही है, जो इन नोटों के लिए हर स्तर पर पहुंचकर फौजदार की गुलामी करते रहे हैं पर इस बार···

क्या सचमुच इतनी आसानी से नोटों को ठुकराया जा सकता है ? ·· उन नोटों को, जिनके लिए पलक मारते फौजदार और उसके साथी खून बहा देते हैं। ···शायद इसीलिए लालसिंह और चन्दा इन रुपयों से कतरा गए। ये रुपये खून में सने हुए हैं। · पर कौन-सा रुपया है जो खून में सनकर नहीं आता ! कई खून ऐसे भी तो होते हैं, जिनमें खून नहीं बहता और खून हो जाता है···तब यही नोट क्यों कलंकित हैं ? ···और उसे लगा कि जितना जो कुछ सोच रहा है वह, उतना सोचने की सामर्थ्य न तो लालसिंह में है, न चन्दा में ? वे तो यों ही, शायद भय से इन्हें स्वीकारने को तैयार नहीं हैं।

अब फौजदार भी नहीं कहेगा। बार-बार कहकर वह बहुत अपमानित हो चुका है। नहीं लेते हैं तो न सही। फौजदार का दिमाग खराब हुआ है जो ज़बरदस्ती रुपया देगा ! ···उंह। उसने गड्डियां फिर से पैंट की जेब में डाल लीं।

कहीं लालसिंह पुलिस से तो नहीं मिल गया ?···वह रुपये ठुकराता है, नज़र मिलाकर बात नहीं करता, हमेशा फौजदार से कतरा जाना चाहता है · क्या ये सारे लक्षण ऐसे नहीं हैं कि फौजदार को उसपर सन्देह होने लगे।

इन दो दिनों में वह लालसिंह से डर गया है। जाने क्यों, जब-जब लालसिंह उसके सामने आया है, उसे लगा है कि लालसिंह के मन में चोर है। उखड़ी-उखड़ी बातें, हमेशा चिन्तित-सा चेहरा, उदास व्यवहार ·· जिसके मन में 'कुछ' होता है, वह ऐसा ही करने लगता है ··

छि: ! किस सीमा तक सोचता रहता है फौजदार। लालसिंह उसका बहनोई है, बिलकुल खून-सा सगा। लालसिंह उसके साथ धोखा करेगा ! नहीं-नहीं !

शायद फौजदार ही डरपोक हो गया है या फिर वह मौत से इतना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जुड़ा हुआ महसूस करता है स्वयं को कि उसे हर आदमी में धोखा नज़र आता है !

आज लालसिंह पर शक कर रहा है, कल चन्दा पर करेगा, परसों भगवती पर · फिर महाराजसिंह पर · · फिर· · ·

सन्देह की कोई सीमा होती है। बेलगाम मन जिस धारा में बहे, बहता ही चला जाता है ।

उसने इस ओर से ध्यान हटा देने की कोशिश की। चन्दा को बुलया, कहा, "ज़रा नीबू ले आ।· · बैजों पर धूल चढ़ गई है, उन्हें चमकाऊंगा।" उसने कमीज़ उतारी और उसके कन्धों पर लगे पीतल के बैज निकाल लिए। इनपर लिखा है, —म० प्र० पु०—मध्यप्रदेश पुलिस । खाकी कमीज़ और यह बैज · ·असली पुलिस को इस सफाई से धोखा देते हैं कि बस !

कहीं सचमुच लालसिंह पुलिस का मुखबिर तो नहीं हो गया ! · · · खयाल फिर दिमाग से आ टकराया। वह चोर नज़र नहीं भूल पा रहा है लालसिंह की ।· · ·कैसे देखता है ?

उसने अपने आपको फिर धिक्कारा—दोबारा वही गन्दा शक ! हिश्श !

चन्दा नीबू ले आई थी। फौजदार ने जेब से चाकू निकाला, बड़े लम्बे फलवाला, और नीबू काटकर बैज पर उसकी फांक रगड़नी शुरू कर दी।

किवाड़ खड़के, शायद लालसिंह आ गया है। इसी वक्त आता है। दोपहर डूबने-सी लगी है।

लालसिंह ही था। फौजदारसिंह ने सुना, बड़ी घबराई-सी आवाज़ में वह चन्दा से पूछ रहा था, "फौजदार· · ·फौज· · ·किधर है वह ? · · ·"

"जल्दी बता ! · · ·"

यह किसकी आवाज़ है ? फौजदारसिंह चौंक गया। यह दूसरा मरदानी आवाज़· · ·

और चन्दा की आवाज़ गायब ! · · ·

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तो फौजदार का सन्देह सही है ! उसने कमीज़ एक ओर फेंकी, फुर्ती से उठा, दरवाज़े से ज़रा बाहर झांका ··

खाकी वरदी···फौजदार ने रायफल उठा ली ! धोखा ! वह झटपट बाहर आया । रायफल ने दनादन गोलियां उगलीं । चन्दा चीखी । लालसिंह और उसके ठीक पीछे खड़े दानों पुलिस अधिकारी भयानक चीत्कार करते हुए धरती पर लोट गए ! फौजदार ने झपटकर दरवाज़ा बन्द किया और बिना चन्दा की रुलाई की ओर ध्यान दिए, टापरे पर चढ़ गया। पीछे गहरी बीहड़ी दरार थी। एक बार लौटकर लेटे-लेटे रेंगते हुए फौजदारसिंह ने चारों ओर नज़र दौड़ाई। खाकी वरदियों के कुछ दल टापरे के गिर्द विखर रहे हैं···बस, कुछ मिनट का ही वक्त है ··

फौजदार एकाएक उठा, तेज़ी से कवेलुओं की पाटोर पर दौड़ा और बीहड़ में कूद गया ! ···

कराहते हुए जब वह उठकर दरार में भागा तो उसे कुछ गोलियों के स्वर और शोर सुनाई दिया, फिर सब डूब गया ··क्योंकि वह स्वयं बीहड़ों की भूलभुलैयों में डूब गया था !

६

पांचवीं जगह शुरू हुई बात भी टूट गई !

महाराजसिंह और भगवती मुरैना से खाली हाथ वापस चले आए। लड़का बहुत अच्छा था। मिडिल पास हो गया था और बड़े क्लासों की तरफ वढ़ने लगा था। देखने में भी अच्छा लगता था। लम्वी-चौड़ी काठी और गेहुंआ रंग । रूपा के संग राम-सीता जैसी जोड़ी लगती, पर न जाने किस बुरे ग्रह में पैदा हुई है रूपा···बात टूट गई !

असल में बात उठी ही नहीं थी। महाराजसिंह ने एक बरात में लड़का देखा था। वहीं उसकी आंख चढ़ गया। घर भी ऊंचा। साठ बीघे की खेती है उनकी। तवरधार के खास तोमर ठाकुरों का कुल । घर में सब भगवान् की कृपा । सास-ससुर, चार बहुएं, नाती-धेवते···पूरी फुलबगिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लगी हुई है। रूपा की बात तय हो जाती तो राज करती, पर न जाने कैसा भाग्य है इसका···कम्बख्त !

चार जगह पहले भी बात चली थी, पर हर बार रूपा के फूटे भाग्य उसके आड़े आ जाते हैं।

इस बार महाराजसिंह और भगवती बड़ी उम्मीद से गए थे, मगर वही जवाब, "फौजदारसिंह के घर से पुलिस का क्लेश बंधा हुआ है।" लड़के का बाप बोला था, "रोज़-रोज़ की हाय-हाय कौन अपने घर में बांधेगा।"

भगवती ने, जो ओट से बात कर रही थी और जिसकी बातें महाराजसिंह अपने शब्दों में कह रहा था, कहा, "फौजदार लाला बागी हो गए, हैं इसमें रूपा का क्या अपराध है। वह तो लच्छमी है ! जिस घर में जाएगी···"

"नहीं, बहिन !" लड़के के बाप ने कहा, "लड़का शहर में पढ़ा-लिखा है। दो क्लास और पास करेगा, फिर मास्टर हो जाएगा। शांत स्वभाव का है। तुम्हारी रूपा के साथ मेल नहीं बैठेगा।"

भगवती को बुरा लगा था, पर सौ बातें होती हैं जिनमें लड़कीवालों को दबना पड़ता है, इसलिए प्रार्थना के स्वर में बोली थी, "रूपा गौ है। जैसे रखी जाएगी, निबाह लेगी। यों भी वह इतनी सीधी है कि अब तक एक भी सनीमा नहीं देखा उसने। दस बार मुरैना तक आई है, पर अगर कोई पूछे तो शहर का रास्ता नहीं बता सकती।"

मगर लड़के का बाप बहुत घबरा गया था। जब महाराजसिंह ने प्रस्ताव किया था, उसी वक्त डरकर उसने इनकार कर देना चाहा था, पर एकदम कैसे इनकार किया जा सकता है। उसकी ज़मीन-जायदाद भी बीहड़ों में ही है और बीहड़ों में फौजदारसिंह भी है। उस समय उसने कहा था, "ठीक है। विचार लेंगे।" यह कहकर उसने उस समय आई बला टाल दी थी और जब भगवती ठकुराइन ने उसे बुलवा भेजा तो वह टाल ही रहा था। कहने लगा, "मैं जानता हूं कि आप लोगों का कुल ऊंचा है। बिहारी ठाकुर से मेरी अच्छी दोस्ती भी थी। मगर ठकुरानी, यह सम्बन्ध बन नहीं पाएगा। ज़माना खराब है। लड़के 'कन्टरोल' में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नहीं रह गए हैं। ज़रा पढ़े-लिखे कि बस···और तुम देख ही रही हो कि लड़का पढ़-लिख गया है। मिडिल पास कर लिया है उसने, अब इन्टरेंस भी कर लेगा।·· नहीं-नहीं, बात बनेगी नहीं !"

भगवती चुप हो गई और भगवती चुप हो गई इसलिए महाराजसिंह भी चुप हो गया और ये दोनों चुप हो गए तो वह भी चुप हो गया। इस तरह बात टूट गई।

महाराजसिंह और भगवती मुंह लटकाए हुए गांव चले आए। भगवती क्रोध से भरी हुई थी। इस रूपा का भाग्य न जाने कैसा है !···महाराजसिंह का यही खयाल है, पर चम्पा कुछ और ही सोचती है ··

रूपा का क्या अपराध ?··· अपराधी है फौजदारसिंह ! रूपा का सगा बड़ा भाई।

रूपा ने कान देकर भगवती, महाराजसिंह और चम्पा के बीच चल रही बातचीत सुनी थी और चुपचाप अपने कमरे में आ बैठी थी ! अभागी !

अभागी ही तो है ! वर्ना कौन-सा घर है इस गांव में, जहां उन्नीस साल की लड़की इस तरह घर में कुंवारी बैठी हो ! उसके साथ की न जाने कितनी लड़कियां घर-द्वारोंवाली हो गई हैं। रामकली, सोना, प्यारी, छोटी···कितनी लड़कियां। कभी-कभी सावन-त्यौहार में गांव आती हैं तो फुलझड़ी-सी खिली हुई। आंखों में काजल, पांवों में महावर, हथेलियों में मेहंदी का रंग चढ़ाए, कलाइयों पर छः-छः चूड़ियां, ठोडी पर गोदना, मांग में सिन्दूर···

कइयों की गोद भर गई है। मांथे पर डिठौना रखे साल-छः महीने का बच्चा कमर-चढ़ा है। रूपा को आश्चर्य होता है, कितनी जल्दी यह परिवर्तन ?···वे अब घरवाली हो गई हैं। घरवाली, बच्चेवाली। दस ऊंच-नीच की बात सोचती होगी। सुहागिनों में उनका बुलावा होता होगा। सारे घर की रोटियां बनाती होंगीं। बहू ठहरीं। जात-बिरादरी में मांग भर कर दस औरतों के बीच बैठतीं होंगी। बड़ी-बड़ी बातें करती होंगी···

और रूपा ?···इनके साथ की लड़की ! पूरी औरत, और सिर्फ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लड़की !

एक दिन भगवती बोली थी—"अब कन्या काहे की है, पूरी औरत हो गई है !" रूपा ने सुना, जी रोने को हो आया था। कहां है पूरी औरत ?···

रूपा का मन हुआ कि ज़ोर-ज़ोर से रो उठे। इतनी ज़ोर से कि उसके शोर में सारी औरतों की आवाज़ें डूब जाएं !

दोपहर का वक्त। धूप कवेलुओं से जबरन घुसकर कमरे में बिछी हुई है, मगर रूपा को लगता है कि रात है। गहरी, अंधेरी रात; अभाग्य के अंधेरे से भरी हुई !

कभी-कभी रूपा को लगता है, वह रोगिणी हो गई है। आंखें जलती हैं। शरीर पर से कपड़े फेंक देने की इच्छा होती है और मन मितलाता रहता है। क्यों होता है ?··· पता नहीं; उस दिन रामकली से पूछा था रूपा ने, "···क्यों होता है ?"

वह हंस पड़ी; बोली, 'अब तेरा ब्याह होना चाहिए !"

और रूपा उदास हो गई। कैसे होगा ब्याह ? भाग्य उसके आड़े है। पांच जगह बात चली और टूट गई। उस दिन भगवती कह रही थी—"यह जनमजली, इसी तरह बैठी रहेगी ! इसका भाग्य ही ऐसा है।"

भाग्य तो खराब है ही। न होता तो फौजदार भइया बागी क्यों होता ?

सब कसूर इस अभागन चम्बल का है, इस माटी का; इस कल-मुंही ने जिस-जिसको पुकारा, वह-वह तबाह हो गया !

उसे रुलाई आ गई। क्यों रो रही है, रूपा नहीं जानती, बस इतना जानती है कि रोना उसके भाग्य में है। सारी जिन्दगी यों ही रोना होगा। सारे सपने बीहड़ों की माटी में इसी तरह धूल खाते रहेंगे।

उसे मालूम ही नहीं हुआ कि इस रुलाई के बीच चम्पा कब कमरे में आ गई। वह तो उस समय जान सकी, जब चम्पा ने उसके सिर पर हाथ फेरना शुरू कर दिया, "रूपा बहिना !···रूपा !··"

और रूपा ने सिर उठाकर देखा। चम्पा उसके माथे पर झुकी हुई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बड़ी मीठी निगाह से उसे देख रही थी। उसके मुलायम हाथ रूपा के माथे पर घूम रहे थे, लटों को संवारते हुए। अनचाहे ही चम्पा ने पूछ लिया था, "क्या हुआ ?…"

रूपा ने जल्दी से आंचल का छोर उठाकर भीगी आंखें पोंछ लीं, "कुछ नहीं ! बस, यों ही…"

चम्पा ने कुछ नहीं कहा। एक ओर चारपाई पर बैठ गई। दोनों निरुद्देश्य इधर-उधर देखती रहीं। जानती हैं कि असली कारण क्या है, पर एक-दूसरे से इस तरह अपने आपको खोला जाए, यह तो जरूरी नहीं। खास तौर से उस स्थिति में जब सब कुछ खुला हुआ हो।

चम्पा ने स्थिति बदलने की गरज़ से कहा, "तुझे मालूम है, सुनहरी के ब्याह की बात भी टूट गई है।"

रूपा चौंकी, "क्यों ?…उसकी तो सगाई…" सुनहरी उसकी सहेली की छोटी बहिन है। वह और भी कुछ कहना चाहती थी, पर न जाने क्यों भटक-सी गई। सुनहरी ! …उस तक के विवाह की बात चलती है और रूपा…

"सुनहरी का जिस घर में विवाह होने जा रहा था, उस घर से एक आदमी बागी…"

"हूं।" रूपा चुप हो गई। तो क्या सुनहरी को भी इसी तरह… बिलकुल रूपा की तरह…नहीं। उसके साथ तो कुछ उलटा ही घटा है। एकाएक वह फिर अपने बारे में ही सोचने लगी और फफककर रो पड़ी, "भाभी !… लोग क्यों हो जाते हैं, बागी !…क्यों ?…"

और चम्पा चुप है। सिर्फ रूपा को बांहों में भरे निर्निमेष छत के कवेलुओं को देखे जा रही है…

'क्यों हो जाते हैं लोग बागी ?' चम्पा का सवाल भी यही है, पर किससे पूछेगी वह ? रूपा तो किसीसे पूछ सकती है, पर चम्पा किससे पूछेगी ?

कवेलुओं से छन-छनकर रोशनी अब भी गिर रही है। चम्पा चाहती है कि रूपा को सांत्वना दे, पर जिसे स्वयं सांत्वना की ज़रूरत हो, वह क्या सांत्वना देगा !…वह सिर्फ रूपा को बांहों में कस लेती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है, कसती जाती है और···एकाएक ही बांहों को ढीला छोड़ देती है। ख़ुद रो उठती है, बिलकुल रूपा की ही तरह···

कवेलुओं को चीरता हुआ एक सवाल उग आया है—'लोग क्यों हो जाते हैं बागी ?'

७

वे दौड़ते-दौड़ते हांफने लगे थे, पर दौड़ना बन्द नहीं किया जा सकता। बेसली नदी के इस पूरे किनारे पर पुलिस तैनात है। रात के दूसरे पहर एकाएक ही पुलिस ने छापा मारा था और वे बचते हुए भाग निकले थे।

सूरज निकला, धूप चढ़ी और बीहड़ों की हर दरार चमकने लगी···

अब से कुछ मिनट पहले वे बीहड़ की ओट में आराम कर रहे थे और अब एकाएक यह हंफा डालने वाली दौड़। कुल अठारह आदमी थे। अधिकतर के पास थ्री-नाट-थ्री बन्दूकें और कुछ के पास दुनालियां।

पुलिस ने पहली बार ही वह झपट्टा मारा कि तीन आदमी खेत रहे। गिरोह का सरदार बहादुरा और दो नये रंगरूट !

कम्बख़्त वे दोनों रंगरूट अभी, कुछ दिनों पहले ही, गिरोह में आए थे। पुलिस के छापे से घबराकर इधर-उधर भागने लगे थे इसलिए मारे गए !

कुछ साथी भटक गए हैं। ऐसे मुकाबलों में अकसर भटक जाते हैं। मुकाबले के समय यह सोचने का वक्त नहीं होता कि मुकाबला किया जाए, बल्कि सोचा यह जाता है कि किधर से बच निकला जाए। आज भी यही हुआ था और जिस आदमी को बीहड़ों में जो रास्ता मिला, वह उधर ही भाग निकला। पातीराम, मुकुन्दा, सरबनसिंह···कई लोग हैं, जो फिलहाल गायब हैं। हो सकता है कि बाद में इनमें से भी एकाध कम हो जाए।

हांफते हुए फौजदारसिंह की तबीयत हुई थी कि कुछ पल ठहर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लिया जाए, मगर कैसे ठहरा जा सकता है। बीहड़ों का यह इलाका कुछ खुला हुआ है. तिसपर पुलिस भी नज़दीक ही है। जब तक घने बीहड़ों में न पहुंच जाएं, स रे लोग असुरक्षित हैं।

बहादुरा मारा गया ! नौ सालों तक बीहड़ों में स्वतन्त्र गिरोह बनाकर लगातार हत्याएं करने वाला बहादुरा मारा गया। कैसे एक गोली आई और उसका सारा इतिहास खत्म कर गई ! फौजदार सोचता है तो विश्वास नहीं कर पाता। इस तरह पलभर में बहादुरा के नौ साल बुझ गए ?

बिलकुल बगल में था बहादुरा। पुलिस ने हमला किया था और बहादुरा ने हमेशा की तरह चीख-चीखकर गिरोह को मोरचाबन्दी के निर्देश देने शुरू कर दिए थे, फिर वह तेज़ी से गोलियां भी बरसाने लगा था। अंधेरी रात में रोशनी के टुकड़े चमकते और बुझ जाते। तेज़ डरावनी आवाज़ें, चीखें, गालियां और गोलियां ! शायद पन्द्रह मिनट में ही सारी चौपड़ उठ गई। एकाएक बहादुरा चीखा। पास में रेंग रहा पातीराम चिल्लाया, "बहादुरा !..."

"क्या हुआ ?" पास की दरार में से किसीने पूछा।

"बहादुरा गया !" पातीराम चीखा।

फिर गोलियां और लगातार कौंधें ! एक बार फौजदार की इच्छा हुई थी कि बहादुरा का चेहरा देख ले, पर गोलियों ने ज़रा भी अवकाश न दिया था और यह इच्छा मन में ही घोंटे हुए वह भाग निकला था !

ओह ! कितना भयावह और बीभत्स क्षण ! फौजदार सिहर उठा था। उसे ग्लानि भी हुई थी। अजीब ज़िन्दगी है। हवा का एक झोंका और रोशनी खत्म ! पुलिस का एक हमला और बहादुरा खत्म ! लाश वहीं पड़ी होगी। अब उसे पुलिसवाले घसीट ले जाएंगे। एक कहानी जिस तरह शुरू हुई थी, उसी तरह खत्म हो गई।

बहादुरा का वह आतंक, जिसके कारण गांव-गांव में लोग सिहर उठते थे, लोहे की एक छोटी-सी गोली ने किस तरह सुखा दिया ? नौ सालों तक हर ज़बान पर रही कहानी सिर्फ तीन शब्दों में बन्द होकर खत्म हो गई है कि बहादुरा मारा गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

एक दिन इसी तरह फौजदारसिंह भी···

वह लड़खड़ा गया। कितना अप्रिय विचार है। वह इसे भूल जाना चाहता है, मगर कितना असमर्थ है वह ! भूल नहीं पा रहा है···

बिलकुल इसी तरह ··बहादुरा की तरह···शायद उससे भी बुरी स्थिति में···फौजदार भी किसी दिन बीहड़ों में ही पड़ा रह जाएगा !

बीहड़ों को लांघते हुए वे चले जा रहे हैं। दौड़ना बन्द कर दिया है। कब तक दौड़ा जा सकता है। शक्ति की सीमा होती है। सामान्य आदमियों से अलग तो हैं नहीं फिर भी असामान्य हरकतें करते हैं। धीरे-धीरे इस असामान्यता का अभ्यास होने लगता है।

औसत आदमियों से अलग होते हुए भी वे अपने-आपको उनसे अलग नहीं कर पाते। कर नहीं सकते, क्योंकि अनुभूति हर स्थिति में सामाजिक ही रहती है। यह मानव-स्वभाव की ऐसी कमज़ोरी है, जिसे परिस्थितियों की कोई भी जटिलता बदल नहीं पाती।

बहादुरा मारा गया !···फौजदारसिंह के दिमाग को फिर से वही ख़याल कुरेदता है। सब क्षणभर में खत्म हो गया। एक गोली आई, धूल का गुबार उड़ा, एक चीख उठी और ··

"ठाकुर, किस तरफ ?" गिरोह का एक सदस्य पूछ रहा है।

"बहादुरा के गांव की ओर चलो ! ·· ऐंती !···" फौजदारसिंह कहता है। और अनचाहे ही एक खयाल में उलझ जाता है—क्या इन लोगों ने फौजदारसिंह को मुखिया मान लिया है ? जब से बहादुरा की मौत हुई है, हर सवाल उसीसे किया जाता रहा है···

शायद मान लिया है ! यह उनकी लाचारी है। असंयत और खतरनाक जानवर उसी का प्रभुत्व मानते हैं, जो उनसे अधिक असंयत और खतरनाक हो। फौजदारसिंह में वह बात है। सबसे तेज़ स्वभाव, सबसे अक्खड़, सबसे दिलेर और सबसे ख़ूंख़्वार !

मगर क्या सिर्फ यही कारण है फौजदार के मुखिया माने जाने का ?···शायद नहीं। एक और कारण है, बहादुरा की टिकुली जड़ी बन्दूक ! मरते वक्त चेहरा भले न देख सका हो फौजदार, पर उसने बहादुरा की रायफल ज़रूर ले ली थी ! रायफल बहुत कीमती होती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है। आदमी से भी ज़्यादा। रायफल है तो आदमी है।

बहादुरा की लाश पर रायफल टटोलते समय फौजदार कुछ ग्लानि से भर आया था क्योंकि उसकी हथेलियां खून में नहा गई थीं··· बहादुरा के खून में! खून, कभी गर्म और कभी ठंडा! सिहर उठा था फौजदारसिंह। एक विचार आया था—रायफल छोड़ दी जाए!··· दूसरे ही क्षण उसे लगा कि यह मूर्खता होगी। बहादुरा की रायफल बहुत कीमती थी। एक तो इसलिए कि वह थ्री-नाट-थ्री थी और दूसरे इसलिए कि उसपर चांदी की टिकुली जड़ी हुई थी। यह टिकुली बहादुरा के सरदार होने की निशानी थी।

फौजदार की आंखें सीने पर लटके रायफल के लकड़ीवाले बट पर जा ठहरीं! सूरज की रोशनी में वह टिकुली एक सितारे की तरह जगमगा रही थी···

दूसरे कन्धे पर फौजदारसिंह की अपनी रायफल थी, पर थ्री-नाट-थ्री होते हुए भी इस रायफल के सामने कितनी फीकी लगती है!···एक बदमज़ा गीत की तरह!···उसका जी हुआ, हंस पड़े! टिकुली जड़ी रायफल उसके पास है और वह गिरोह का सरदार हो गया है! ये सब उसका हुक्म मानेंगे···मान ही रहे हैं···

पर यह खुशी क्षण-भर में लुप्त हो गई। टिकुलीजड़ी रायफल का आधे से अधिक हिस्सा खून से रंगा हुआ था और उसपर अब पपड़ी-सी जमने लगी थी। पुराने चूने के प्लास्तर-सी उखड़ती हुई परतें!··· फौजदारसिंह को लगा जैसे कोई चीज़ है जो भीतर से उसे हिलाने लगी है···

बहादुरा का खून!···परतें···चुप खून, पर बोलता हुआ जैसे कह रहा हो—'तू मूरख है!···देखा नहीं था, मैं कैसे पड़ा रह गया? बिलकुल इसी तरह तू भी···! अबे, इस रायफल में क्या है, सब कुछ इस खून की तासीर है!'

"सुन रे! धीरजसिंह!···" फौजदार बोला।

वे सब रुक गए। फौजदार उनका नया सरदार है। उसके पास टिकुलीजड़ी रायफल है। गिरोह के मुखियों की परम्परागत रायफल!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इसके साथ एक विश्वास कायम है। जब तक यह रायफल पुलिस के हाथ नहीं पहुंचेगी, गिरोह नहीं टूटेगा।

धीरजसिंह अदब से उसके सामने खड़ा हुआ था। फौजदार बोला, "यहां पास में कहीं कोई गांव नहीं है ?"

धीरजसिंह ने एक सवालभरी नज़र उसके चेहरे पर गड़ा दी, जैसे पूछा हो—'क्यों ?'

"कोई गांव हो तो इस रायफल को साफ कर लें। इसमें बहादुरा का खून लिपटा हुआ है !"

"मगर यह खून तो अपने आप छूट जाएगा, ठाकुर ! रायफल पर खून नहीं जमता। सारा खून उखड़ जाता है। लोहे पर से परतें बनकर थोड़ी देर में मरी चमड़ी की तरह सब उतर जाएगा !" धीरजसिंह ने कहा।

फौजदार सुनता ही रह गया। फिर वे सब चलने लगे। उसके कानों में अब भी धीरजसिंह का जवाब गूंज रहा है—'रायफल पर खून नहीं जमता !...सब मरी चमड़ी की तरह छूट जाएगा !...रायफल पर खून नहीं ..'

एक दिन फौजदार का खून भी इस रायफल पर इसी तरह जमेगा और छूट जाएगा क्योंकि रायफल पर खून नहीं जमता !

गिरोह के किसी सदस्य ने प्रस्ताव किया था कि एक बार बहादुरा के गांव पहुंचकर उसके बाल-बच्चों से मिला जाए और बात फौजदारसिंह को पसन्द आई थी। वैसा किया भी जा रहा था पर एकाएक ही फौजदार-सिंह ने इरादा बदल दिया। बोला, "बहादुरा के घर पहुंचना ठीक नहीं है। शायद अभी पुलिस का वहां दौरा होगा।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि पुलिस बहादुरा की लाश शनाख्त कराएगी।" फौजदार ने जवाब दिया।

गिरोह के सभी लोगों को अपने सरदार की सूझबूझ पर खुशी हुई, पर कहीं तो चलना होगा। वे सोच रहे थे। वे सभी फिलहाल आराम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

करना चाहते थे। पुलिस के हमले ने उन्हें बुरी तरह थका डाला था। यों भी इस समय गिरोह में कुछ लोग कम हैं। गिरोह के लोगों का कम होना ताकत का कम हो जाना है। जब तक भटके हुए लोग वापस गिरोह से नहीं आ मिलते, दौरे करना खतरनाक ही है। इस बीच किसी ऐसी सुरक्षित जगह की खोज होनी चाहिए, जहां ठहरे रहकर आदमियों की प्रतीक्षा की जाए !

थोड़ी देर की चर्चा के बाद ही उन्होंने वैसी जगह चुन ली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

Dreams and Realities. Lionel Birch.
Jugal Deal Kh Babu - Jag - Jeevan Sadan

मुद्रक : शाहदरा प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-३२

11269

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

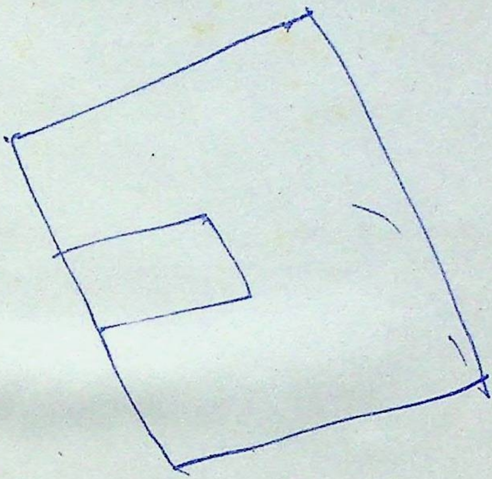

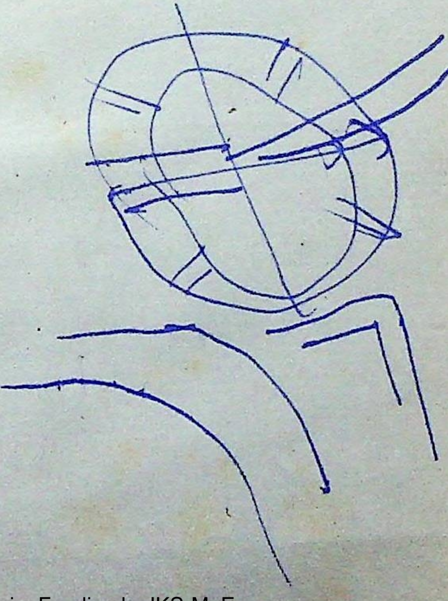

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE